

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 26 जनवरी 2026 वर्ष - 80 अंक - 22 मूल्य - रु. 12/- कुल पृष्ठ -16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें




अंदर पढ़िये...

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

कृषक जगत के सुधी पाठकों, विज्ञापन दाताओं, प्रतिनिधियों एवं शुभचिंतकों को **गणतंत्र दिवस 2026** की हार्दिक शुभकामनाएं।
- कृषक जगत परिवार

एआई - औद्योगिक विकास से कृषि और किसानों को मिलेगा लाभ : डॉ. यादव

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और तकनीक आधारित विकास से किसानों सहित समाज के सभी वर्गों को सशक्त बनाया जाएगा। एआई को शासकीय डाटाबेस से जोड़कर कृषि योजनाओं और सेवाओं का लाभ पात्र किसानों तक अधिक पारदर्शिता और समबद्ध तरीके से पहुंचाया जाएगा।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम, दावोस में NVIDIA की ग्लोबल एआई इनिशिएटिव्स की उपाध्यक्ष कैलिस्टा रेडमंड के साथ हुई बैठक में मुख्यमंत्री ने बताया कि मध्यप्रदेश कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों, डेटा-आधारित निर्णय प्रणाली और एआई का उपयोग कर किसानों को बेहतर जानकारी, सलाह और सेवाएं

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम, दावोस में शामिल हुए मुख्यमंत्री



उपलब्ध करा रहा है। इससे फसल उत्पादन, संसाधन प्रबंधन और आय बढ़ाने में मदद मिल रही है।

NVIDIA ने राज्य में सांबरेन एआई, कौशल विकास, नवाचार और रोजगार सृजन के लिए दीर्घकालिक सहयोग पर

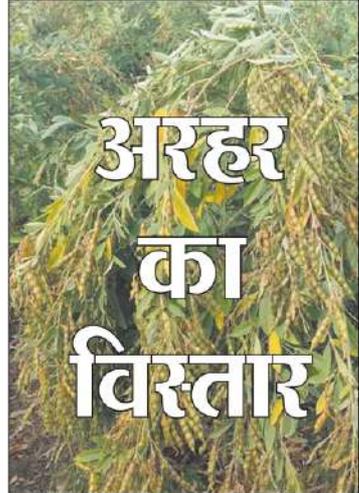
सहमति जताई। इससे कृषि, आईटी और ग्रामीण विकास में तकनीकी समाधान और मजबूत होंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दावोस में मध्यप्रदेश की उद्योग-हितैषी नीतियों का सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई

दिया। पिछले दो वर्षों में तेज औद्योगिक विकास के कारण निवेशकों का भरोसा बढ़ा है। राज्य के पास पर्याप्त भूमि, बिजली और बेहतर परिवहन सुविधा है, जिससे एग्री-आधारित उद्योगों को बढ़ावा मिल रहा है।

मध्यप्रदेश नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में देश का पावर हब बन चुका है। सोलर, विंड और पंप स्टोरेज परियोजनाओं के साथ 32 लाख किसानों को सोलर पंप देकर बिजली में आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। इससे सिंचाई लागत घटेगी और कृषि उत्पादन बढ़ेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एग्रीकल्चर और पोल्ट्री सेक्टर में राज्य में अपार संभावनाएं हैं। एआई, नवीकरणीय ऊर्जा और औद्योगिक निवेश के समन्वय से मध्यप्रदेश में कृषि को अधिक लाभकारी, टिकाऊ और आधुनिक बनाया जाएगा।



कृषि वर्ष 2026 में म.प्र. के लिए दलहन आत्मनिर्भरता की निर्णायक कड़ी

(सुनील गंगराड़े)

दलहन उत्पादन बढ़ाना आज केवल फसल विस्तार का विषय नहीं रह गया है। यह पोषण सुरक्षा, किसान आय स्थिरता और टिकाऊ खेती से जुड़ा राष्ट्रीय सरोकार बन चुका है। कृषि वर्ष 2026, जिसमें नीति-निर्माण और कृषि परिवर्तन के निर्णायक चरण के रूप में देखा जा रहा है, मध्य प्रदेश के लिए यह अवसर लेकर आया है कि वह दलहन-विशेषकर अरहर (तुअर) को अपनी कृषि रणनीति के केंद्र में रखे। राष्ट्रीय स्तर पर अरहर को लेकर दिशा स्पष्ट है, योजनाएँ मौजूद हैं और एमएसपी घोषित है। इसके बावजूद किसान इसे जोरिखम भरी फसल मानता है। इसका कारण उत्पादन नहीं, बल्कि उत्पादन के बाद की अनिश्चितता है। जब भरोसा नहीं बनता, तब विस्तार नहीं होता।

राष्ट्रीय नीति: मंशा स्पष्ट, प्रभाव सीमित
भारत सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन-दलहन (NFSM), PM-AASHA और दलहन आत्मनिर्भरता अभियानों के माध्यम से अरहर उत्पादन बढ़ाने के लिए स्पष्ट लक्ष्य तय किए हैं।

उन्नत बीज, तकनीकी प्रशिक्षण और न्यूनतम समर्थन मूल्य-नीति स्तर पर सभी प्रावधान मौजूद हैं। समस्या यह है कि इन योजनाओं का लाभ किसान तक समय पर और भरोसेमंद रूप में नहीं पहुंच पाता। योजना जब खेत में दिखाई नहीं देती,

तो किसान उसे अपने निर्णय का आधार नहीं बनाता।

म.प्र. की प्राकृतिक बड़, पर रणनीतिक कमी
मालवा, निमाड़, बुंदेलखंड और विन्ध्य क्षेत्र की काली व मध्यम भूमि, वर्षा का स्वरूप और तापमान अरहर के लिए अनुकूल हैं। इसके बावजूद राज्य में दलहन क्षेत्र का बड़ा हिस्सा मूंग और उड़द तक सीमित है। यह स्थिति दर्शाती है कि बाधा संसाधनों की नहीं, बल्कि रणनीतिक प्राथमिकता और नीति-प्रोत्साहन की स्पष्टता की है। जिस फसल के साथ खरीदी और बाजार का भरोसा जुड़ा होता है, किसान उसी को प्राथमिकता देता है।

अंतरवर्तीय खेती : विस्तार का रास्ता

अरहर को अकेली फसल के रूप में देखना अब व्यावहारिक नहीं है। सोयाबीन, मक्का और कपास के साथ अंतरवर्तीय अरहर किसान को कम जोखिम में अतिरिक्त आय का अवसर देती है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

इफको का हे वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा

फसलों की भरपूर पैदावार के लिए इफको के उत्पादों की उत्कृष्ट श्रृंखला

आत्मनिर्भर भारत आत्मनिर्भर कृषि

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तृतीय तल, पर्यावास भवन अरेरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

अधिक जानकारी हेतु: www.nanourea.in - www.nanodap.in वरुण के हेल्पलाइन नंबर (दैनिक) 1800 103 1967

केन्द्रीय आम बजट 2026-27 से आशा और उम्मीदें

कृषि क्षेत्र को नई दिशा देने का अवसर : संरचनात्मक सुधार और नवाचार पर जोर जरूरी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत की कृषि व्यवस्था आज भी देश की लगभग 45 प्रतिशत आबादी को रोजगार देती है, लेकिन राष्ट्रीय सकल मूल्य संवर्धन (GVA) में इसका योगदान मात्र 18 प्रतिशत के आसपास है। यह स्थिति कृषि क्षेत्र में कम उत्पादकता, सीमित मूल्य संवर्धन और लंबे समय से चली आ रही संरचनात्मक चुनौतियों को दर्शाती है।

बीडीओ इंडिया के पार्टनर - एग्रिकल्चर, गवर्नमेंट एडवाइजरी श्री सौम्यक विस्वास ने कहा कि छोटे और बिखरे हुए भूमि जोत, सहायक क्षेत्रों में अपर्याप्त निवेश, कटाई के बाद होने वाला भारी नुकसान और अनुसंधान के लिए सीमित संसाधन कृषि विकास में बड़ी बाधाएं बने हुए हैं। ऐसे में आने वाला केन्द्रीय बजट 2026 कृषि क्षेत्र की दीर्घकालिक मजबूती के लिए एक अहम अवसर प्रदान कर सकता है।

उन्होंने कहा कि बजट में कृषि अनुसंधान और जलवायु-स्मार्ट खेती को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके लिए DARE (कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग) के बजट में



वृद्धि, पीपीपी मॉडल के जरिए नवाचार को बढ़ावा तथा सूक्ष्म सिंचाई और पुनर्जो (रीजनरेटिव) खेती जैसी जलवायु-संवेदनशील पद्धतियों को प्रोत्साहन आवश्यक है।

श्री सौम्यक विस्वास के अनुसार, पशुपालन, मत्स्य पालन और बागवानी जैसे सहायक कृषि क्षेत्रों को मजबूत करने के साथ-साथ कोल्ड चेन और प्रोसेसिंग अवसरंचना का विस्तार किया जाए, तो किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। साथ ही, किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को बाजार से जोड़ने वाली उत्पाद रणनीतियों और क्रेडिट गारंटी के माध्यम से सशक्त बनाना जरूरी है, जिससे छोटे किसान मूल्य श्रृंखला का हिस्सा बन सकें। उन्होंने यह भी कहा कि बागवानी, दलहन और तिलहन फसलों की ओर विविधीकरण को प्रोत्साहित करने से अत्यधिक पानी पर निर्भर फसलों पर दबाव कम होगा। वहीं, डिजिटल उपकरणों पर सब्सिडी, साझा तकनीकी केंद्र और रियायती कृषि सलाह सेवाओं के माध्यम से तकनीक को तेजी से अपनाने से छोटे किसानों की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

किसानों को बड़ी उम्मीदें, कृषि बनेगी विकसित भारत की मजबूत नींव

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश जैसे-जैसे केन्द्रीय बजट 2026 की ओर बढ़ रहा है, वैसे-वैसे कृषि और ग्रामीण विकास को लेकर उम्मीदें भी बढ़ती जा रही हैं। यह समय 2030 के कृषि लक्ष्यों की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण है और साथ ही विकसित भारत 2047 के सपने को साकार करने की मजबूत आधारशिला रखने का अवसर भी है। विशेषज्ञों का मानना है कि देश के समग्र विकास में कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की भूमिका सबसे अहम है।

इस संदर्भ में बाघ के कट्टी डिविजनल हेड (क्रॉप साइंस) श्री साइमन विबुश ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए मजबूत आय और ऋण सहायता, स्थिर और स्पष्ट व्यापार नीतियाँ, तथा भंडारण, परिवहन, मूल्य संवर्धन और कटाई के बाद की सुविधाओं में निरंतर निवेश की आवश्यकता है, ताकि इसका सीधा लाभ किसानों तक पहुँचे।

उन्होंने कहा कि इसके साथ-साथ उन्नत बीज, सुरक्षित फसल संरक्षण, डिजिटल खेती और जलवायु के अनुकूल कृषि तकनीकों को तेजी से अपनाना जरूरी है। साइमन विबुश के अनुसार, विकसित भारत 2047 के विज़न के अनुरूप यदि ये कदम उठाए जाते हैं, तो भारतीय कृषि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सकती है और किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ ग्रामीण समृद्धि का मजबूत आधार तैयार होगा।

पशुधन और मत्स्य क्षेत्र को निर्यात में नई मजबूती की उम्मीद : श्री गुलाटी

केन्द्रीय बजट 2026-27 से देश के पशुधन और मत्स्य पालन क्षेत्र को विकास के अगले चरण में प्रवेश दिलाने की उम्मीद जताई जा रही है। भैंस मांस और समुद्री उत्पादों के वैश्विक बाजार में भारत की बढ़ती भागीदारी के बीच उद्योग जगत को बजट में निर्यात समर्थन को प्राथमिकता दिए जाने की अपेक्षा है।

सीएलएफएमए इंडिया के चेयरमैन श्री दिव्या कुमार गुलाटी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक आसान पहुँच, वैश्विक मानकों के अनुरूप गुणवत्ता एवं प्रमाणन व्यवस्था, तथा अमेरिका, यूरोपीय संघ और आसियान जैसे उच्च-मूल्य बाजारों के लिए ब्रांडिंग सहयोग बेहद जरूरी है।

उन्होंने कहा कि निर्यात को टिकाऊ बनाए रखने के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत निरंतर और बढ़ा हुआ समर्थन आवश्यक है। श्री गुलाटी ने यह भी बताया कि पिछले बजट में जलीय कृषि से जुड़े कुछ इनपुट्स पर बैकस कस्टम ड्यूटी में कटौती के बाद, इस बजट में तालाब और हैचरी उपकरण, गुणवत्तापूर्ण फीड, कोल्ड-चेन और प्रोसेसिंग अवसरंचना पर अतिरिक्त शुल्क राहत तथा जीएसटी के युक्तिकरण की उम्मीद है।



दावोस में यूपीएल



वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम दावोस में दूसरे दिन नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री मध्यप्रदेश श्री राकेश शुकला के साथ प्रतिनिधिमंडल ने यूपीएल के चेयरमैन और ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर श्री जय श्रॉफ से कृषि, खाद्य प्रसंस्करण इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में निवेश संबंधी चर्चा की। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा श्री मनु श्रीवास्तव, प्रमुख सचिव श्री मनीष मिह, प्रमुख सचिव औद्योगिक नीति एवं निवेश श्री राघवेंद्र सिंह तथा जनसंपर्क आयुक्त श्री दीपक सक्सेना उपस्थित थे।

देश में रबी का रकबा 652 लाख हेक्टेयर से अधिक पहुंचा

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि मंत्रालय द्वारा 16 जनवरी 2026 तक रबी फसलों के जारी आंकड़ों के अनुसार देशभर में फसलों की बुआई में उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

मंत्रालय के अनुसार, इस वर्ष अब तक कुल 652.33 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में रबी फसलों की बुआई हो चुकी है, जो कि पिछले वर्ष की समान अवधि (631.45 लाख हे.) की तुलना में 20.88 लाख हे. अधिक है।

रबी सीजन की प्रमुख फसल गेहूँ का रकबा बढ़कर 334.17 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 6.13 लाख हेक्टे. अधिक है।

इसी तरह तिलहन फसलों के तहत क्षेत्रफल में 3.53 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। खासतौर पर सरसों, अलसी, कुसुम और मूंगफली की बुआई में बढ़ोतरी देखने को मिली है।

दालों का रकबा भी बढ़ा इस वर्ष दालों का कुल रकबा 137.00 लाख हेक्टेयर रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.82

लाख हेक्टेयर अधिक है। चना और मसूर की बुआई में बढ़त दर्ज की गई है। श्री अन्न और मोटे अनाज में स्थिरता श्री अन्न एवं मोटे अनाज के तहत बुआई क्षेत्र 58.72 लाख हेक्टेयर रहा, जिसमें कुल मिलाकर 2.79 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई। मका और जौ में अच्छा विस्तार हुआ है।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई 16 जनवरी 2026 की स्थिति (लाख हे. में)			
फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	2024-25
गेहूँ	312.35	334.17	328.04
चावल	42.93	25.58	20.98
दालें	140.42	137.00	133.18
चना	100.99	95.88	91.22
मसूर	15.13	18.12	17.66
मोटे अनाज	55.33	58.72	55.93
ज्वार	24.62	22.54	23.85
मका	23.61	27.55	25.05
तिलहन	86.78	96.86	93.33
सरसों	79.17	89.36	86.57
मूंगफली	3.69	3.52	3.37
अलसी	1.93	1.99	1.76
कुल	637.81	652.33	631.45

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चाट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चाट में शामिल नहीं किया गया है।
स्रोत : कृषि मंत्रालय

कृषि वर्ष में दलहन विस्तार....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यदि राज्य नीति में अंतरवर्तीय अरहर को स्पष्ट प्रोत्साहन, बीज सहायता और बीमा कवरेज मिले, तो बिना अतिरिक्त जोखिम के बड़े क्षेत्र में विस्तार संभव है।

कम अबाधि किस्में : तकनीक उपलब्ध, भरोसा नहीं

आज भी अरहर को लंबी अबाधि की फसल माना जाता है, जबकि 120-150 दिन में पकने वाली किस्में कृषि अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित की जा चुकी हैं। समस्या किस्मों की उपलब्धता से अधिक उनकी पहुँच और प्रदर्शन की है। राज्य बीज निगम और कृषि विभाग को कागजी प्रचार से आगे बढ़कर खेत आधारित प्रदर्शन पर

जोर देना होगा। किसान वही मानता है, जो वह अपने या पड़ोसी के खेत में देखता है।

MSP खरीदी : विस्तार की निर्णायक कड़ी
अरहर के क्षेत्र विस्तार में सबसे बड़ा अवरोध खरीदी व्यवस्था की अनिश्चितता है।

- PM-AASHA का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब खरीदी केंद्र समय पर और पर्याप्त संख्या में खुलें
- एफपीओ और सहकारी संस्थाओं को वास्तविक भूमिका मिले
- दाल मिलों से सीधा बाजार जुड़ाव बने।

फसल बीमा: जोखिम प्रबंधन की कमजोर कड़ी
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में अरहर शामिल है, लेकिन अंतरवर्तीय फसलों का सही

आकलन अब भी चुनौती बना हुआ है। सरल, पारदर्शी और समयबद्ध बीमा भुगतान ही किसान के जोखिम-भय को कम कर सकता है। बिना प्रभावी बीमा के किसी भी फसल विस्तार को उम्मीद अंधूरी रहती है।

प्रशिक्षण और विस्तार : खेत को केंद्र में लाना होगा

अरहर के विस्तार के लिए जरूरी है-
● क्लस्टर आधारित डेमो प्लॉट ● सफल किसानों को 'अरहर प्रेरक' के रूप में आगे लाना ● स्थानीय भाषा में डिजिटल और फील्ड प्रशिक्षण।

जब विस्तार तंत्र कागज से निकलकर खेत तक पहुँचेगा, तभी नीति का असर दिखेगा।

राज्य-स्तरीय लक्ष्य और जवाबदेही
यदि मध्य प्रदेश- ● प्रत्येक जिले में खरीफ

क्षेत्र का 5-10 प्रतिशत अरहर के लिए तय करे

● तीन वर्षीय स्पष्ट कार्ययोजना बनाए
● कृषि, सहकारिता और विपणन विभागों की साझा जिम्मेदारी सुनिश्चित करे तो राज्य दलहन उत्पादन में राष्ट्रीय नेतृत्व की भूमिका निभा सकता है।

निष्कर्ष : नीति से भरोसे तक

अरहर केवल एक फसल नहीं, बल्कि दलहन आत्मनिर्भरता, किसान आय स्थिरता और टिकाऊ खेती का साझा समाधान है। नीतियाँ मौजूद हैं, तकनीक उपलब्ध है-अब आवश्यकता है कि सरकारी मंशा किसान के भरोसे में बदले। किसान अरहर उगाने को तैयार है। उसे बस यह भरोसा चाहिए कि फसल के बाद सरकार भी उसके साथ खड़ी रहेगी।

**कृषक कल्याण
वर्ष 2026**

कृषि तथा संबद्ध क्षेत्रों में रणनीतिक बदलावों से समृद्ध होंगे किसान

**राज्य स्तरीय पुष्प महोत्सव
30 जनवरी को भोपाल में**



भोपाल (कृषक जगत)। कृषि क्षेत्र से जुड़े विभिन्न विभागों तथा संस्थाओं के विशेषज्ञों के मध्य हुए गहन संवाद में किसानों की आय बढ़ाने के लिए साधारण तौर पर उत्पादित फसलों की उत्पादन वृद्धि के लिए उन्नत तकनीकों के प्रयोग के साथ उद्यानिकी की उच्च गुणवत्ता वाली फसलों का रकबा बढ़ाने, दुग्धोत्पादन में वृद्धि करने तथा मत्स्य उत्पादन को बहुगुणित करने के लिए विभिन्न पहलुओं पर विचार मंथन किया गया।



कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रदेश के **कृषि उत्पादन आयुक्त श्री अशोक वर्णवाल** ने कहा कि विगत एक दशक में संयुक्त कृषि विकास दर में आगे निकलकर हमारा प्रदेश भारत में दूसरे स्थान पर है किंतु इसे पहले स्थान पर ले जाने का लक्ष्य हमारे सामने है। उन्होंने कहा कि विगत 15 वर्षों में हमने सिंचाई, आदान उपलब्धता तथा मार्केट लिंकेज के क्षेत्र में बहुत प्रगति की है जिससे एकल फसल की खेती

करने वाले कृषक दो और तीन फसलों का उत्पादन ले रहे हैं। कृषि उत्पादन आयुक्त ने कहा कि प्रदेश में उद्यानिकी का क्षेत्र दोगुना करने पर इसके उत्पादन से किसानों को 60 प्रतिशत लाभ बढ़ सकता है। उन्होंने कहा कि हाल ही में किए गए दो महत्वपूर्ण प्रयोग - उर्वरक वितरण व्यवस्था में सुधार के लिए ई - विकास एप तथा सोयाबीन में भावांतर भुगतान, अत्यंत सफल रहे हैं। उन्होंने कहा कि मछली उत्पादन की संभावनाओं का दोहन किया जाएगा तथा पशुपालन में निजी संस्थाओं के सहयोग से दूध का

उत्पादन दस लाख लीटर प्रतिदिन से 50 लाख लीटर प्रतिदिन तक ले जाया जाएगा। **कृषि सचिव श्री निशांत बरबड़े** ने कृषक कल्याण वर्ष के अंतर्गत दस दिशा के कार्यक्रमों में प्रत्येक के 5-5 घटकों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि हमें कृषि के सभी संबद्ध विभागों की सर्वश्रेष्ठ तकनीकों को एकजुट कर किसानों के हित में नियोजित करना होगा।

इस अवसर पर आयोजित **गोल मेज़ तकनीकी सत्रों में प्रमुख सचिव डेयरी एवं पशुपालन श्री उमाकांत उमराव, उद्यानिकी सचिव श्री जॉन**

किंरसले, कृषि संचालक श्री अजय गुप्ता, मंडी बोर्ड के प्रबंध संचालक श्री कुमार पुरुषोत्तम, कृषि अभियांत्रिकी संचालक श्री पवन सिंह श्याम, कृषि महाविद्यालय सीहोर के अधिष्ठाता डॉ. यासीन आदि के नेतृत्व में विषय विशेषज्ञों, किसान संगठन प्रतिनिधियों तथा विभिन्न विभागीय अधिकारियों द्वारा सुझाव दिए गए।

भोपाल (कृषक जगत)। 'वाइब्रेंट' की थीम पर 30 जनवरी 2026 को गुलाब उद्यान भोपाल में आयोजित होने वाला 'राज्य स्तरीय पुष्प महोत्सव' बहुउद्देशीय होगा। पुष्प महोत्सव के भव्य आयोजन के लिये तैयारियों की समीक्षा बैठक आयुक्त श्री अरविंद दुबे की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इसमें राज्य स्तरीय रोज सोसायटी के प्रदेश अध्यक्ष श्री सच्चिदानंद गौड़ सहित अन्य पदाधिकारी और विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

आयुक्त श्री दुबे ने कहा कि प्रदेश में फूलों की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने और कृषकों को आय में वृद्धि को प्रोत्साहित करने के लिये पुष्प महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसमें कृषि, एवं उद्यानिकी फसल उत्पादन और फूड प्रोसेसिंग को बढ़ावा देना सरकार का मूल लक्ष्य है। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश में मुख्यतः गुलाब, जरबेरा, गेंदा, सेवंती, रजनीगंधा, ग्लैडियोलास, आर्किड, लिलियम, एंथुरियम, कारनेशन, गुडहल, बोगनवेलिया आदि फूलों का उत्पादन होता है। श्री दुबे ने कहा कि महोत्सव में भाग लेने सभी प्रतिभागियों को विभाग द्वारा पूर्ण सहयोग और समर्थन दिया जाएगा। पुष्प उत्पादकों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी आयोजित की जाएगी, उत्कृष्ट स्थान पाने वालों को पुरस्कृत और सम्मानित किया जाएगा। इस मौके पर वृहद प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी।

**सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों* के लिए हर किसान के बजट के
अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिंचाई व्यवस्था
के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(*# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानों आदि के लिए)**

<p>जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेक्टर 5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी) साईज - 12, 16, 20 मिमी</p> 	<p>जैन टर्बो एक्सेल प्लस 0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2 साईज - 12, 16, 20 मिमी</p> 	<p>जैन टर्बो लाईन सुपर 0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2 साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज</p> 
<p>जैन टर्बो लाईन - पीसी क्लास 2 साईज - 12, 20 मिमी</p> 	<p>जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी 83, 84 मील (0.33, 0.38 मिमी) - क्लास 1 व 2 साईज - 12, 16, 20 मिमी</p> 	<p>जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी</p> 

नोट - ड्रिपर व ड्रिपलाइन अलग अलग प्रियर पैकेज में उपलब्ध
दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री: 1800 599 5000
ई-मेल: jsi@jains.com; वेबसाइट: www.jains.com



सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

प्रदेश में रबी फसलों की बुवाई पूरी

138 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में हुई बोनी

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल (कृषक जगत)। राज्य में रबी फसलों की बुवाई समाप्त हो गई है। कुल 138.45 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई है जो गत वर्ष की समान अवधि से लगभग 1 लाख हेक्टेयर कम है। वहीं गेहूँ की बुवाई गत वर्ष की तुलना में लगभग 2 लाख हेक्टेयर अधिक हुई है।

प्रदेश में रबी फसलों की कुल बुवाई 138.45 लाख हेक्टेयर में हुई है। जो लक्ष्य के विरुद्ध 99.7 फीसदी है। ज्ञातव्य है कि इस वर्ष 138.85 लाख हेक्टेयर में रबी फसलें लेने का लक्ष्य रखा गया था। कृषि विभाग के मुताबिक चालू रबी में राज्य की प्रमुख फसल गेहूँ की बोनी 96.59 लाख हेक्टेयर में हुई है। जबकि गत वर्ष अब तक 94.34 लाख हेक्टेयर में गेहूँ बोया गया था। दूसरी प्रमुख फसल चने की

बुवाई 16.1 लाख हेक्टेयर में हुई है। जो गत वर्ष की बुवाई 20.44 लाख हे. से लगभग 4 लाख हेक्टेयर कम है। अन्य फसलों में मटर 3.16 लाख हे. में, मसूर 6.25 लाख हेक्टेयर में बोई गई है। राज्य की प्रमुख तिलहन फसल सरसों की बोनी 11.88 लाख हेक्टेयर में हुई है जबकि गत वर्ष समान अवधि में 12.44 लाख हेक्टेयर में बोनी की गई थी। इसी प्रकार अलसी की बोनी 92 हजार हेक्टेयर में हुई

है तथा इस वर्ष गन्ना 99 हजार हेक्टेयर में बोया गया है।

रबी फसलों की बुवाई 16 जनवरी 2026 तक (लाख हे. में)		
फसल	लक्ष्य	बुवाई
गेहूँ	96.81	96.59
जौ	0.34	0.35
चना	17.28	16.01
मटर	3.30	3.16
मसूर	6.36	6.25
सरसों	12.23	11.88
अलसी	1.20	0.92
गन्ना	1.33	0.99

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्दिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराडे

अमृत जगत

सिर्फ विचार से तत्व ज्ञान नहीं मिलता,
उम्के लिए साधना करनी पड़ती है। - ब्रह्म चेतन्य

कुछ दशक पहले कृषि के मुख्य दो मौसम खरीफ और रबी हुआ करते थे। हालत यह थी कि खरीफ मौसम में जबकि खेती का सबसे बहुमूल्य आदान पानी बिल्कुल मुफ्त होता था। देश के अधिकांश हिस्सों के खेत खाली पड़े रहते थे कपास, बाजरा, अरहर, ज्वार, मक्का और धान्य बाहुल्य क्षेत्रों में धान के अलावा काले-काले खेत चारों ओर दिखाई पड़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं होती थी। खरीफ के बाद रबी और रबी के बाद भी तीन-चार माह खेत बेकार पड़े रहते थे। समय का चक्र बदला हमारी जनसंख्या दिन दूनी रात चौगुनी के समान बढ़ी और साथ-साथ हमारे भोजन की जरूरत भी बढ़ी, जोत घटी, आवश्यकता बढ़ी। कहावत है आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है कम रकबे से अधिक उपज 100 प्रतिशत से भी कम फसल सघनता ने जोर पकड़ा और जन्म हुआ जायद का। ग्रीष्मकाल में सूने खेतों में हल चला, बखर चला और तीन-चार माह की छोटी अवधि में उपजाने वाली फसलों का चयन कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किया गया और ग्रीष्म का सूखा हरियाली में परिवर्तित होने लगा। पिछली वर्षा में जो खाद्यान्नों में उत्पादन बढ़ा है उसका श्रेय पूर्ण रूप से जायद को ही जाता है। कृषि के इतिहास में

जायद से कमायें अतिरिक्त आमदनी

ग्रीष्मकाल में केवल नदी किनारों की रेत पर समाज विशेष के लोग तरबूज-खरबूज, ककड़ी, खीरा तथा अन्य कद्दूवर्गीय फसल लगाकर अपनी आमदनी बढ़ाते थे। आज की स्थिति में जायद का महत्व बहुत बढ़ गया है। सवा अरब से ज्यादा की जनसंख्या वाले देश को अब और अब की जरूरत है, जायद में वैसे तो फसलें



सीमित ही होती हैं पर जो भी होती हैं नगदी कहलाती हैं। कद्दूवर्गीय फसलों के अलावा मूंग, उड़द, सूर्यमुखी, तिल, लोबिया, ग्वारफली, मूंगफली, मक्का जैसी फसलें भी सरलता तथा सफलता से पैदा की जा सकती हैं। आज की आवश्यकता है कि नदी किनारों पर उपलब्ध लाखों हेक्टर भूमि जहां पास ही पानी उपलब्ध है में जायद फसलों का विस्तार किया जाये ताकि अधिक पैसा मिल सके। कद्दूवर्गीय

फसलों के उन्नत बीज की उपलब्धि तथा उनकी उत्पादन तकनीकी का विस्तार हो तथा नदी किनारों पर अनुसंधान प्रयोग डालकर विकसित तकनीकी का प्रदर्शन किया जाना इस दिशा को गति प्रदान कर सकता है। जायद में चाहे कद्दूवर्गीय फसलें हो या तिलहन, दलहन सभी को पलने-पुसने के लिए भरपूर सूर्य प्रकाश उपलब्ध रहता है। यही वजह है कि जायद की मक्का, मूंगफली, मूंग, उड़द सभी की औसत उपज खरीफ की तुलना में अधिक होती है। मौसम शुष्क होने के कारण कीट-रोग की सक्रियता भी खरीफ-रबी की तुलना में सीमित तथा कम होती है और यदि होती भी है कि उन पर नियंत्रण के उपाय भी सरलता से किये जा सकते हैं। छिड़काव, भुरकाव के बाद पानी गिरकर दवा के बह जाने का भी डर नहीं रहता है। देश में दालों (प्रोटीन) जो कि ऊर्जा का मुख्य श्रोत है अकेला खरीफ पैदा नहीं कर सकता है जायद इसका सबसे बड़ा विकल्प बन सकता है। दलहन फसलों को लगाने से एक तीर से दो शिकार सम्भव होते हैं एक तो अच्छी गुणवत्ता वाली फसल, दूसरा भूमि में नत्रजन की गांठों से नत्रजन का जमाव जो आने वाली खरीफ फसल के लिये उपयोगी होता है। देश में पशुचारों की भी कमी है। जायद में चरी की ज्वार जैसा पौष्टिक चारा सरलता से पशुओं के लिये पैदा किया जा सकता है। उपरोक्त सभी कारणों से जायद को जरूरी समझ कर जहां कहीं भी संसाधन उपलब्ध हैं फसलें अवश्य लगाना चाहिये ताकि आर्थिक गति को गति हम दे पायें।



• डॉ. किशोर पवार

जरा सोचिए, जिस पेड़ को लगाना ना पड़े और वह अपने आप धीरे-धीरे घने जंगल में बदल जाए तो उसे क्या बेकार कहेंगे? देश के अनेक क्षेत्र इस तथाकथित बेकार पेड़ से भरे पड़े हैं और यह स्वनिर्मित जंगल तरह-तरह के जीव-जंतुओं, विशेषकर पक्षियों से गुलजार है। शहरों से लगभग गायब हो चुकी गौरैया का यह सुरक्षित ठिकाना है। आज भी गौरैया के बड़े-बड़े झुंड इन कटीले पेड़ों पर बसेरा करते हैं और अपने आप को शिकारियों से सुरक्षित पाते हैं। मालवा और निमाड़ की कई सड़कों के किनारे दोनों तरफ आज भी बबूल के सैकड़ों पेड़ लगे हुए हैं जो बरसात के मौसम में अपने सुंदर पीले फूलों के साथ राहगीरों को शानदार नजारा प्रस्तुत करते हैं।

कबीर का एक बड़ा ही प्रसिद्ध दोहा है - करं बुराई सुख चहे, कैसे पावे कोय। बोया पेड़ बबूल का, तो आम कहाँ से होय। देखा जाए तो आज हम सब बबूल ही तो बो रहे हैं। हमारे सारे काम बबूल बोने जैसे ही हैं। पेड़ काट रहे हैं और चाहत यह है कि

बेकार नहीं है बबूल !

हरियाली बनी रहे, वायु-प्रदूषण दूर हो। पहाड़ खोद रहे हैं और उम्मीद करते हैं कि भूस्खलन ना हो, पहाड़ी सड़कों के किनारे झरने बहते रहें। शहर की सड़कों, कॉलोनी की गलियों पर पानी के लिए अपारगम्य पेवर्स लगाकर मिट्टी को सांस नहीं लेने दे रहे हैं। आपने जमीन में पानी जाने के रास्ते ही बंद कर दिए तो भूजल कैसे बढ़ेगा? नलकूपों में पानी कहाँ से आएगा? यह सब काम बबूल लगाने जैसे ही तो हैं।

इसी संदर्भ में एक और दोहा याद कर लेते हैं, महाकवि रहीम का। यह समाज के ऐसे लोगों के लिए लिखा गया है जो परोपकारी नहीं हैं। रहीम कहते हैं-आप न काहू काम के, डार, पात, फल, फूल। औरन को रोकत फिरे रहिमन पेड़ बबूल।

कुछ लोगों की नजर में बबूल के यह बेकार पेड़ अरावली पर्वत श्रृंखला की एक खास वनस्पति है-

खेजड़ी, खैर और पीतू की तरह। अरावली पर्वत श्रृंखला के उजाड़े जाने की महती देशव्यापी चर्चा के बीच आइए इस कांटेदार बबूल की चर्चा कर लें और देखें कि यह आम आदमी और किसानों के लिए कितना उपयोगी है। सदियों से इसकी छाल और फलियां कपड़ा रंगने के लिए टैनिन उपलब्ध कराती हैं। इससे खाकी रंग के कपड़े भी रंगे जाते हैं। बबूल का गोद औषधीय महत्व का होने के साथ ही केलीको प्रिंटिंग, डाईंग, कागज के निर्माण, माचिस, रसाही, पेंट और कन्फेशनरी की खड़ी-मीठी गोलियों के निर्माण में उपयोग होता है। इसकी नर्म नाजुक शाखाएं टूथब्रश और मंजन दोनों का कार्य कर मसूड़े की कसावट भी बढ़ाती हैं। इसकी फलियों को आज भी निमाड़ में पशु-खाद्य सामग्री बनाने के लिए

एकत्रित कर बाहर भेजा जाता है। यह एक घरेलू रोजगार का सुलभ साधन है। इसकी लकड़ी सागौन से ज्यादा मजबूत है और बड़े पैमाने पर पट्टिए बनाने के काम में आती है। इससे उम्दा किस्म का चारकोल मिलता है। यह लकड़ी बैलगाड़ी के पहिए, हल, बखर और खेती के कई उपकरण बनाने के काम में आती है। बबूल, जिसे कांटों के नाम पर कोसा जाता है, उसका उपयोग आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों को

नुकसान पहुंचाने वाले पशुओं से बचाने के लिए बागड़ की तरह किया जाता है। पलाश के पत्तों से बने पतल-दोनों को आपस में जोड़ने के लिए बबूल के बड़े-बड़े कांटे सुई और धागा दोनों का काम एक साथ करते हैं। बबूल का पेड़ मटर कुल का है यानि इसकी जड़ें पर जड़ ग्रंथियां पाई जाती हैं जिनमें उपस्थित सहजीवी बैक्टीरिया हवा की नाइट्रोजन को उपयोगी रूप में बदल देते हैं जो यूरिया का काम

करती है। आसपास की मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाकर उसे उपजाऊ बनाती है। गहरी जड़ें मरुस्थल का विस्तार रोकती हैं। राजस्थान, मालवा, हरियाणा - सब जगह जल और वायु के संरक्षण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। राजस्थान, गुजरात और दिल्ली से लगे क्षेत्रों के पर्यावरण का यह एक महत्वपूर्ण पेड़ है।

टीज आफ देहली और जंगल टीज आफ सेंट्रल इंडिया कितानों के लेखक प्रदीप कृष्ण इसके उपयोग गिनाते हुए कहते हैं कि यह भारतीय पेड़ों में बहुत ही खास महत्व का है। इसे खेतों की मेड़ पर लगाया जाता है। बबूल एक मध्यम आकार का कांटेदार पेड़ है जिसका वितान पंखदार होता है, छाल काली। पंखनुमा हरे पत्तों से बरसात में गहरे पीले, छोटी-छोटी गोल गेंद जैसे फूलों से लबब यह पेड़ अपने आपमें एक आकर्षण पैदा करता है। इसकी फलियां नेकलेस की तरह मोतियों वाली होती हैं जिन्हें कभी ग्रामीण युवतियां पांव में पैजणियों की तरह और कान में बुंदों की तरह लटकाती थीं।

रंगीन फूल पुकेसरो के कारण सुगंधित होते हैं। इसकी पतियां ऊठों, बकरियों और भेड़ों का प्रिय चारा है जो इसके बीजों को बिखरने और दूर-दूर तक फैलाने में मददगार हैं। इसके पीले फूलों पर कई परागणकर्ता, जैसे-मधुमक्खियां और तितलियों का आना-जाना लगा रहता है। यह फूल उन्हें मीठा नेक्टर उपलब्ध कराते हैं जिनसे उनकी आबादी बनी रहती है। इसके पेड़ मिट्टी के कटाव को रोकते हैं और उसकी गुणवत्ता सुधारते हैं। पतियों में नाइट्रोजन 12 से 18 प्रतिशत तक पाई गई है। शुष्क भूमि के लिए फिर से बहाली में मदद करता है। भले ही इस पेड़ को उपेक्षित माना गया हो, पर यह है, बहुत महत्वपूर्ण।

इसका जिन्न बाइबल में भी आया है तो इतने महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पेड़ को बेकार करार देने से पहले जरा सोच लेना चाहिए। उसके बारे में कोई अंतिम राय नहीं बनानी चाहिए। अंत में भविष्य में यही बात होगी कि कांटे पेड़ बबूल का, तो सुख कहाँ से होय। (संप्रेस)



- डॉ.एस.के. सिंह, प्रधानाचार्य
को-ऑपरेटिव रूरल डेवलपमेंट ट्रस्ट
- डॉ. इंदिरा राठी, नैनो वैज्ञानिक
इफको आंवला, बरेली, उ.प्र.
drksingh@iffco.in

मृदा जीवन का आधार है जिस पर कृषि एवं वातावरण की निर्भरता होती है। मृदा स्वास्थ्य एक ऐसी अवस्था है, जिसमें मिट्टी अपने पर्यावरण के अनुरूप पारिस्थिकी तंत्र के कार्यों को पूरा करती है। अधिक बोलचाल की भाषा में मिट्टी का स्वास्थ्य मिट्टी के सभी घटकों जैसे माइक्रोबायोटा, पौधों और जानवरों की अनुकूल बातचीत से उत्पन्न होता है एक स्वस्थ मृदा निम्न आवश्यक कार्यों को स्थिरता प्रदान करती है।

- जल को एकत्र करने एवं उसके बहाव को नियंत्रित करती है।
- सूक्ष्म जीवों में जैव विविधता एवं उत्पादकता में सहयोग करती है।
- खनिज एवं मृदा जीवाणु, ग्राउंडवाटर के प्रदूषकों को फिल्टर करने का कार्य करता है।

• मृदा जीवाणु कुछ तत्व जैसे फास्फोरस, नाइट्रोजन एवं कार्बन के एकत्रीकरण एवं चक्र में भाग लेते हैं।

• पौधों के वृद्धि को एक आवश्यक माध्यम प्रदान करना एवं मानव द्वारा किए जा रहे निर्माण को सपोर्ट करने का कार्य मृदा द्वारा किया जाता है।

मृदा स्वास्थ्य का निर्धारण इसके भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों के आधार पर किया जाता है। एक स्वस्थ मृदा फसलों के अच्छे वानस्पतिक वृद्धि उपज वृद्धि खाद्य उत्पादन एवं वायु सुरक्षा में सहयोग करती है। स्वस्थ मृदा बालावरण से कार्बन स्थिरिकरण कर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने का कार्य करता है। दुर्भाग्यवश कई कारणों जैसे सघन खेती, वनों की कटाई, छरण, प्रदूषण, एवं अनुपयुक्त उर्वरक एवं इसके उपयोग के कारण मृदा का स्वास्थ्य खतरे में है।

एक ताजे अध्ययन में पता चला है कि यूरोपीय यूनियन में लगभग 61.1 प्रतिशत जमीन भूमि छरण से प्रभावित है F.A.O के एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व की लगभग 33.1 प्रतिशत भूमि का छरण हो चुका है एवं सन्

मृदा स्वास्थ्य संवर्धन एवं वैकल्पिक उर्वरक उपयोग

2050 तक लगभग 90.1 प्रतिशत भूमियों के छरण की संभावना है।

आधुनिक खेती मुख्य रूप से उर्वरकों के उपयोग पर निर्भर है जिसके कारण वैश्विक



जनसंख्या का भरण पोषण हो पा रहा है परंतु यदि उर्वरकों के उपयोग पर ठीक तरह से प्रबंध नहीं किया गया तो मृदा की उर्वरता एवं उत्पादकता निश्चित रूप से प्रभावित होगी। जब संश्लेषित उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है तो सूक्ष्म जीवाणु जो मिट्टी को भुरभुरा बनाते हैं

शस्य क्रियाओं के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण

निम्न शस्य क्रियाओं के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण किया जा सकता है।

(अ) मिश्रित खेती

एक ही खेत में कई प्रकार के फसलों को उगाकर मृदा उत्पादकता एवं उर्वरता को बढ़ाया जा सकता है। इससे मृदा का छरण एवं मृदा जनित रोगों की रोकथाम होती है दलहनी फसलों के उगाने से मृदा में नत्रजन का स्थिरिकरण होता है एवं अधिक गहरी जड़ों वाली फसलों से भूमि की उर्वराशक्ति में सुधार होता है।

(ब) कम जुताई एवं सीधी बुआई

बार-बार जुताई करने के कारण भूमि का छरण होता है एवं नमी का तेजी से छरण होता है बिना जुताई किये सीधी बुआई से उपलब्ध अवशेषों को सड़ा कर मिट्टी में मिलाने से भूमि की उर्वराशक्ति में सुधार होता है।

(स) हरी खाद का उपयोग

हरी खाद कृषि में मृदा की उर्वरता बढ़ाने का एक प्राकृतिक और प्रभावी तरीका है। इसमें कुछ विशेष फसलों को खेत में उगाकर उन्हें फूल आने की अवस्था में जुताई द्वारा मिट्टी में मिला दिया जाता है। इससे मिट्टी में जैविक पदार्थ और पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ती है।

एवं पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं, नष्ट हो जाते हैं। इसलिए यह अच्छा है कि जितना आवश्यक हो उतना ही दिया जाए जिसका निर्धारण मिट्टी परीक्षण के आधार पर किया जाना चाहिए। यह गलत अवधारणा है कि मृदा विटामिन रासायनिक उर्वरकों के उपयोग के साथ बढ़ते हैं जबकि इसके विपरीत रासायनिक उर्वरकों एवं पेस्टिसाइड के अत्यधिक प्रयोग से मृदा उर्वरकता घटती है।

सामान्य भाषा में उर्वरक वे पदार्थ हैं जिनको पौधों के उत्पादकता एवं उपज वृद्धि के लिए पौधों के ऊपर सीधे अथवा मिट्टी में मिलाकर उपयोग किया जाता है। उर्वरक मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं 1. कार्बनिक एवं

2. संश्लेषित अथवा रासायनिक।

कार्बनिक खाद या प्राकृतिक खाद को वनस्पति या जीव अवशेषों से प्राप्त किया जाता है जबकि अकार्बनिक अथवा रासायनिक

उर्वरकों को रासायनिक प्रक्रिया के माध्यम से तैयार किया जाता है। कार्बनिक अथवा प्राकृतिक खादों का उपयोग कर मृदा स्वास्थ्य को संरक्षित एवं फसलों से अच्छा एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। रासायनिक अथवा संश्लेषित उर्वरकों की मात्रा को कम कर निम्न वैकल्पिक



स्रोतों का उपयोग कर मृदा उर्वरता को संरक्षित अथवा उसमें सुधार किया जाता है।

गोबर की खाद और कंपोस्ट

गोबर की खाद को जानवरों के गोबर से तैयार किया जाता है जबकि कंपोस्ट को खाद्य पदार्थों के अवशेष एवं अन्य वानस्पतिक अवशेषों से सड़ाकर बनाया जाता है।

मृदा सुधारक

यह एक प्रकार के ऐसे पदार्थ होते हैं जिनको मिट्टी में मिलाने से उसकी भौतिक संरचना एवं पोषकता में सुधार होता है।

जैव उत्प्रेरक

जैव उत्प्रेरक जैविक स्रोतों से तैयार किया गया पदार्थ है जिसको बीज, पौधों अथवा मिट्टी में मिलाया जाता है समुद्री घास से तैयार किया गया जाता है जैव उत्प्रेरक किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है जो किसानों की फसलों को व्यापक पोषण प्रदान करता है।

जैव उर्वरक

जैव उर्वरक को सूक्ष्म जीवाणुओं के माध्यम से तैयार किया जाता है। जो कि मृदा उर्वरता में वृद्धि करते हैं इसका उपयोग कर लंबे समय तक मृदा उर्वरता बनाए रखने में सहायता मिलती है।

बायो-पेस्टिसाइड

मृदा में विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म जीवों की उपस्थिति से कार्बन को एकत्र करने में मदद मिलती है। जब हम विभिन्न प्रकार के कीड़ों एवं बीमारियों से पौधों को बचाने के लिए रासायनिक कीटनाशकों या फफूंदनाशकों का प्रयोग करते हैं तो मिट्टी में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट होने लगते हैं रासायनिक, कीटनाशक अथवा फफूंदनाशकों के स्थान पर जैविक पेस्टिसाइड का उपयोग करके हम मिट्टी में इन सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या को बनाए रख सकते हैं।

स्लोरिलीज फर्टिलाइजरस

स्लोरिलीज फर्टिलाइजर मिट्टी में तत्वों को धीरे-धीरे लंबे समय तक उपलब्ध कराता है जिससे सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि के कारण मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है।

नैनो उर्वरक

नैनो उर्वरक आधुनिक युग का उर्वरक है जिसमें नैनो आकार के तत्व होते हैं जिसके कारण इसकी उपयोग क्षमता अधिक होती है इफको द्वारा

विभिन्न प्रकार के नैनो उर्वरक जैसे नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, नैनो जिंक, नैनो कॉपर का निर्माण तरल रूप में किया गया है जो कि पूर्ण रूप से वातावरण के अनुकूल एवं मिट्टी, जल एवं वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करता है।

इस प्रकार वैकल्पिक उर्वरक उपयोग एवं विभिन्न शस्य क्रियाओं के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण किया जा सकता है। कृषकों में जागरूकता लाकर एवं इसे क्रियान्वित कराने वाली संस्थाओं के सक्रिय भागीदारी से वृहत पैमाने पर परिणाम प्राप्त करने के लिये यहाँ कार्य निश्चित रूप से किया जा सकता है।

● राज जैन, बीएससी कृषि
● अरुण साहू, असिस्टेंट प्रोफेसर
विक्रान्त यूनिवर्सिटी, ग्वालियर
sas_arun@vikrantuniversity.ac.in

मौसम

यह आमतौर पर गर्मियों (अप्रैल से जून) के मौसम में खिलता है। शिरीष के फूल गर्मियों में खिलने वाले रेशेदार पीले कोमल, फूल होते हैं, जिनमें एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं, जो त्वचा के रोगों और घावों में उपयोगी होता है।

शिरीष के फूल और पड़े के बारे में

रूप और समय: यह एक विशाल वृक्ष है जिसके कल छोटे फले होते हैं और गर्मियों (अप्रैल - जून) में पीले, रेशेदार फूल खिलते हैं, कोमल होते हैं।

औषधीय गुण: इनमें एंटी - बैक्टीरियल, एंटी - फंगल और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जिनका उपयोग त्वचा की समस्याओं (दाद, खुजली, घाव) और आंतरिक शुद्धिकरण के लिए होता है।

बोवाई

शिरीष के बीज काफी सख्त होते हैं, इसलिए उन्हें सीधे मिट्टी में बोने पर अंकुरण में बहुत समय लगता है या बीज सड़ जाते हैं। घर पर नर्सरी तैयार करने के लिए आप इस वैज्ञानिक लेकिन सरल विधि का पालन कर सकते हैं -

बीजों का चयन और संग्रहण

समय: मार्च से मई के बीच जब शिरीष की फलियां भूरी होकर सूख जाएं और पड़े पर खड़खड़ाने लगे, तब उन्हें तोड़ लें।

चयन:

फलियों को खोलकर स्वस्थ, बड़े और बिना छेद वाले बीज चुनें। जिन बीजों में बारीक छेद हो, उन्हें हटा दें क्योंकि उनमें घुन लगा हो सकता है।

बीज उपचार

शिरीष के बीजों का बाहरी आवरण बहुत कठोर होता है। इसे 'सुप्त अवस्था' तोड़ने के लिए नीचे दी गई दो में से कोई एक विधि अपनाएं -

गर्म पानी की विधि:

पानी को उबालें और उसे आग से उतार लें। जब पानी हल्का ठंडा हो जाए (लगभग 80°C), तो बीजों को उसमें डाल दें और 24 घंटे के लिए छोड़ दें। बीज फूलकर आकार में दोगुने हो जाएंगे।

ठंडा पानी विधि: यदि आप गरम पानी का जोखिम नहीं लेना चाहते, तो बीजों को सामान्य पानी में 48 घंटे तक भिगोकर रखें।

मिट्टी का मिश्रण

पौधों के बेहतर विकास के लिए मिट्टी का सही अनुपात जरूरी है - 50% सामान्य बगीचे की मिट्टी, 30% गोबर की सड़ी हुई खाद या वर्मीकम्पोस्ट, 20% रेत (बालू) इन सबको मिलाकर छान लें ताकि कंकड़ पत्थर निकल जाए।

बुवाई की विधि

किसानों का मित्र और बहुउपयोगी वृक्ष

शिरीष एक मध्यम से बड़े आकार का पेड़ है जिसे भारतीय कृषि और वानिकी में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसे 'सफेद सिरिस' या 'काला सिरिस' के नाम से भी जाना जाता है।

मिट्टी की उर्वरता बढ़ाना: शिरीष एक फलीदार पौधा है। इसकी जड़ों में विशेष ग्रंथियां होती हैं जो हवा से नाइट्रोजन लेकर मिट्टी में मिला देती हैं। इससे मिट्टी उपजाऊ बनती है और आसपास की फसलों को प्राकृतिक खाद मिल जाती है।

पशुओं के लिए पौष्टिक चारा: कृषि क्षेत्र में शिरीष की पत्तियों का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में किया जाता है। इसकी पत्तियों में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है, जो गाय, भैंस और बकरियों



शिरीष के फूल : पाउडर पफ

पॉलीथिन बैग: नर्सरी के लिए काले रंग के छोटे पॉलीथिन बैग (5x8 इंच) का उपयोग करें। नीचे 2-3 छोटे छेद जरूर करें।

गहराई: हर बैग में 1 से 1.5 सेटीमीटर की गहराई पर 2 बीज बोएं।

दूरी: यदि आप वयारी में बो रहे हैं, तो बीजों के बीच 10 सेमी की दूरी रखें।

देखभाल और अंकुरण

पानी: बुवाई के तुरंत बाद फव्वारे से पानी दें। मिट्टी में हमेशा नमी रहे, लेकिन कीचड़ नहीं।

अंकुरण समय: बीज 7 से 15 दिनों के भीतर अंकुरित हो जाते हैं।

घूप: शुरुआत के 15 दिनों तक पौधों को हल्की छाया में रखें, उसके बाद उन्हें ऐसी जगह रखें जहाँ 4-5 घंटे की घूप मिले।

खेत में रोपाई

जब पौधे की ऊंचाई 1.5 से 2 फिट हो जाए (आमतौर पर 3-4 महीने में), तब वे खेत में लगाने के लिए तैयार होते हैं।

रोपाई से पहले पॉलीथिन को सावधानी से काटें ताकि जड़ों के आसपास की मिट्टी न टूटे।

एक खास प्रो-टिप

शिरीष के छोटे पौधों पर कभी-कभी 'लौफ माइनर' (पत्तियों पर सफेद धारियां बनाने वाले कीड़े) का हमला होता है। इससे बचने के लिए घर पर बना नीम का तेल या नीम का काढ़ा हर 15 दिन में स्प्रे करें।

के स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छी मानी जाती है।

छायादार और मिट्टी का संरक्षण:

शिरीष का फैलाव बहुत अच्छा होता है, इसलिए यह खेतों की मेड़ों पर लगाने के लिए बेहतरीन है।

छाया: यह चाय और कॉफी के बागानों में छाया देने के काम आता है।

मिट्टी का कटाव:

इसकी जड़ें मिट्टी को मजबूती से पकड़ती हैं, जिससे भारी बारिश में भी उपजाऊ मिट्टी बहती नहीं है।

शिरीष के फूल के लिए मिट्टी का चयन

शिरीष एक बहुत ही सहनशील पेड़ है, जो लगभग हर तरह की मिट्टी में जीवित रह सकता है।

लेकिन अगर आप चाहते हैं कि यह तेजी से और अच्छे से बढ़े, तो मिट्टी के बारे में ये बातें ध्यान रखें -

मिट्टी का प्रकार: शिरीष के लिए दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है। हालांकि, यह रेतीली मिट्टी और हल्की पथरीली जमीन पर भी उग सकता है।

जल निकासी: मिट्टी ऐसी होनी चाहिए जिसमें पानी जमा न हो। शिरीष के पेड़ को जलभराव पसंद नहीं है। अगर जड़ के पास पानी रुका रहेगा, तो इसकी जड़ें सड़ सकती हैं। इसलिए ढलान वाली या ऐसी जगह चुनें जहाँ से पानी निकल जाए।

मिट्टी का पीएच मान: यह 5.0 से 8.5 पीएच मान वाली मिट्टी में आराम से बढ़ सकता है।

बंजर जमीन के लिए भी उपयुक्त: अगर आपके खेत का कोई हिस्सा कम उपजाऊ या बंजर है, तो वहाँ भी आप शिरीष लगा सकते हैं। यह मिट्टी की गुणवत्ता को सुधारने में मदद करता है क्योंकि इसकी पत्तियां खाद का काम करती हैं।

लगाने के लिए कुछ आसान टिप्स

मिट्टी तैयार करना: गड्ढा खोदते समय उसमें थोड़ी सी गोबर की खाद मिला दें, जिससे शुरुआती विकास तेजी से हो।

लकड़ी का उपयोग

शिरीष की लकड़ी मजबूत और टिकाऊ होती है। किसान इसका उपयोग हल, बैलगाड़ी के पहिए और अन्य कृषि उपकरण बनाने में करते हैं। इसके अलावा, इसका उपयोग फर्नीचर और इंधन (जलाऊ लकड़ी) के लिए भी किया जाता है।

मधुमक्खी पालन

शिरीष के फूलों में भरपूर मात्रा में मकरंद

गहराई: चूँकि इसकी जड़ें काफी गहरी और फैलने वाली होती हैं, इसलिए इसे ऐसी जगह लगाएं जहाँ जमीन के नीचे पत्थर की परत न हो।

वया आप अपने खेत की मिट्टी की जांच के हिसाब से इसे लगाने की सलाह चाहते हैं?

शिरीष लगाने की सही तकनीक

खेत की मेड़ों पर शिरीष लगाने के लिए निम्नलिखित चरणों का पालन करना चाहिए:

गड्ढों की तैयारी: मानसून शुरू होने से पहले 60x60x60 सेमी आकार के गड्ढे खोदें। दो पेड़ों के बीच कम से कम 5 से 6 मीटर की दूरी रखें ताकि उनकी छतरी एक-दूसरे में न उलझे।

मिट्टी का उपचार: गड्ढे की मिट्टी में नीम की खली और गोबर की खाद मिलाएं। इससे शुरुआती दौर में दीमक और कीटों से सुरक्षा मिलती है।

रोपण का समय: जुलाई-अगस्त (मानसून का समय) सबसे उपयुक्त है। नर्सरी से लाए गए 6-9 महीने पुराने पौधों को लगाएं।

छंटाई: शुरुआती 2-3 वर्षों तक पेड़ की निचली शाखाओं की छंटाई करते रहें। इससे पेड़ सीधा और ऊंचा जाएगा, जिससे खेत में छाया कम पड़ेगी और फसलों को पर्याप्त घूप मिलेगी।

शिरीष के साथ उगाई जाने वाली फसलें
शिरीष की जड़ें गहरी होती हैं और यह मिट्टी में नाइट्रोजन छोड़ता है, इसलिए इसके साथ ऐसी फसलें उगाई जा सकती हैं जिन्हें नाइट्रोजन की अधिक आवश्यकता होती है।

छाया सहन करने वाली फसलें

चूँकि बड़े होने पर शिरीष की छाया काफी फैलती है, इसके नीचे निम्नलिखित फसलें बेहतर परिणाम देती हैं -

हल्दी और अदरक: इन फसलों को हल्की छाया की आवश्यकता होती है। शिरीष के नीचे की नमी इनके कटों के विकास में मदद करती है।

अरबी: छायादार स्थानों पर पैदावार देती है।

अनाज और दलहन

अरहर: अरहर और शिरीष दोनों एक ही परिवार के हैं। इनके बीच का तालमेल मिट्टी की उर्वरता को दोगुना कर देता है।

मक्का: शिरीष द्वारा स्थिर की गई नाइट्रोजन का लाभ मक्का की फसल को मिलता है, जिससे पैदावार बढ़ती है।

मूंग और उड़द: इन लघु अवधि की फसलों को पेड़ की कतारों के बीच खाली जगह में आसानी से उगाया जा सकता है।

चारा फसलें

नेपियर घास या गिनी घास: अगर आप पशुपालन करते हैं, तो पेड़ों के बीच की जगह में इन घासों को लगा सकते हैं। शिरीष की गिरती पत्तियां इन घासों के लिए प्राकृतिक खाद का काम करती हैं।

होता है। जिस क्षेत्र में शिरीष के पेड़ अधिक होते हैं, वहाँ मधुमक्खी पालन बहुत सफल होता है क्योंकि मधुमक्खियाँ इसके फूलों से शहद इकट्ठा करना पसंद करती हैं। इससे न केवल शहद का उत्पादन बढ़ता है, बल्कि आसपास की फसलों में परागण की प्रक्रिया भी तेज होती है, जिससे फसलों की पैदावार में सुधार होता है।

ईंधन और लकड़ी की प्राप्ति

किसान अपनी घरेलू ऊर्जा जरूरतों के लिए शिरीष की सूखी टहनियों का उपयोग ईंधन के रूप में करते हैं। इसकी लकड़ी मजबूत होती है, जिसका उपयोग कृषि उपकरणों (जैसे हल, बैलगाड़ी के पहिये) और ग्रामीण निर्माण कार्यों में किया जाता है।





● डॉ. माधुरी स. लहामगे ● ऋषिकेश कंटाले
● निथी डेवरी, अपोलो कॉलेज ऑफ़ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर

बटेर को लावा तितर ऐसे विविध नाम से जाना जाता है। बटेर पक्षी अपनी स्वादिष्ट मांस, अंडे और अपने औषधीय मुर्गी के लिए जाना जाता है। कुछ वर्षों में बटेर की जापानी नस्लों को विकसित किया गया है। इसलिए बटेर पालन आसान हो गया है। बटेर पालन आजकल के परिवेश में ग्रामीण व्यवस्था में श्रेष्ठतम व्यावसायिक पालन की श्रेणी में आता है। कुकूट पालकों को जापानी बटेर की फार्मिंग के लिये एक लाइसेंस की आवश्यकता होती है। लाइसेंस चार प्रकार के होते हैं। बटेर बिक्री के लिए, बटेर पालने के लिए, मांस बिक्री के लिए, बटेर उत्पादन के लिए। जो आसानी से पशुधन अधिकारी से मिल सकता है।

आवास प्रबंधन

बटेर चूजों का पालन दो तरीके से किया जा सकता है, डीप लीटर पद्धति और बैटरी बूडर इसके लिए बैटरी बूडर काफी उपयुक्त होता है।

डीप लीटर पद्धति

इस पद्धति में कम जगह लगती है। दो सप्ताह तक डीप लीटर विधि में 200 से 250 वर्ग से.मी. प्रति चूजा जगह होनी चाहिए। उसके बाद चूजों को बैटरी बूडर में रखा जाता है।

बैटरी बूडर पद्धति

● पहले दो सप्ताह तक 3×2.5×1.5 फीट जगह

बटेर पालन के लाभ

कुकूट पालन में नये विकल्प के तौर पर कम खर्च में अधिक आय पाने का जरिया बना है बटेर पालन। व्यवसाय में आमदनी के लिये मुर्गी की तुलना में जापानी बटेर की विशेषतः पर ध्यान दें।

- बटेर पालने के लिए कम जगह लगती है।
- कम खर्च में बटेर पालन कर सकते हैं।
- बटेर की प्रजाति प्रति वर्ष तीन से चार पीढ़ी को जन्म दे सकती है।
- मादा बटेर अनुकूल वातावरण में लम्बे समय तक अंडे देती है।
- व्यावसायिक बटेर पालन में टीकाकरण की आवश्यकता नहीं होती है तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होने के कारण इसमें बीमारियों न के बराबर होती है।
- जापानी बटेर के अंडों की पौष्टिकता मुर्गी के अंडों से कम नहीं होती है।
- बटेर का अंडा मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयुक्त है।
- बटेर का मांस बहुत स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। उनके मांस में वसा बहुत कम होता है। इसलिए बटेर का मांस रक्तचाप के रोगियों के लिए बहुत उपयुक्त है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अतिरिक्त आय का बड़ा स्रोत बटेर पालन

आज भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे स्तर पर मुर्गी पालन से अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। साथ ही मुर्गी पालन आज दुनिया में आय प्राप्ति का एक बड़ा व्यवसाय बन चुका है। इसके साथ ही भारत में बटेर की खेती अच्छी आय और रोजगार के अवसर का एक बड़ा स्रोत हो सकती है। बटेर सबसे छोटे आकार के पोल्ट्री पक्षियों की एक प्रजाति है जिसकी पालन-पोषण प्रणाली बहुत आसान और सरल है। जंगली बटेरों को घरेलू पक्षियों के रूप में पालने के तरीकों का पता जापानी वैज्ञानिकों ने पहले लगाया। बटेर की खेती जापान और दुनिया भर में काफी फैल गई है। अब दुनिया भर में बटेर की खेती का व्यवसाय लोग मांस और अंडे दोनों के व्यावसायिक उत्पादन के लिए करते हैं। यह व्यवसाय अन्य पोल्ट्री व्यवसाय की तुलना में अधिक लाभदायक है। जापानी बटेर पालन में भारत का मांस उत्पादन में पॉचवां तथा अण्डा उत्पादन में सातवां स्थान है। सभी प्रकार की वायु और पर्यावरण के साथ बटेर खुद को ढाल सकते हैं और बटेरों के लिए भारतीय जलवायु बहुत उपयुक्त है। आजकल भारतवर्ष में ज्यादा लोग जापानी बटेर का व्यावसायिक पालन कर रहे हैं। बटेर के मांस और अंडे अन्य पोल्ट्री अंडे की तुलना में बहुत स्वादिष्ट और पौष्टिक होते हैं क्योंकि इसमें तुलनात्मक रूप से प्रोटीन, फास्फोरस, लोहा, विटामिन ए बी 1 और बी 2 अधिक होता है।

में लगभग 100 बटेर रख सकते और तीन से छह सप्ताह तक 4×2.5×1.5 फीट जगह में लगभग 50 बटेर रखे जा सकते हैं।

● 6 से 7 सप्ताह की आयु वाले बटेर से अंडे मिलने लगते हैं। प्रजनन के लिए तीन मादा पर एक नर की व्यवस्था करें।

● एक मुर्गी के लिए निर्धारित स्थान पर 8-10 बटेर रख सकते हैं। छोटे आकार के होने के कारण इनका पालन आसानी से किया जा सकता है। इसके साथ ही इनपे दाने की खपत कम होती है।

● बटेर पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए उनके विविध नस्लों के बारे में जानना जरूरी है।

● केंद्रीय अनुसंधान संस्थान के द्वारा जो नस्लें विकसित की गई हैं।

ब्रॉयलर बटेर की नस्लें : कैरी उत्तम (सफेद छाती वाले) कैरी श्वेता (सफेद पंख वाले) और कैरी पर्ल (सफेद अंडे देने वाले)।

अंडा देने वाली बटेर की नस्लें : इंग्लिश सफेद ब्रिटिश रेंज और मांचुरियन गोल्ड।

आहार प्रबंधन

बटेर आहार के लिए कोई खास व्यवस्था नहीं करनी पड़ती है। बटेर की सही शारीरिक बढ़वार के

लिए संतुलित आहार की जरूरत होती है।

● बटेर की शारीरिक बढ़वार 10-12 सप्ताह कि उम्र में पूरी हो जाती है। शुरु के 3 सप्ताह में अधिक बढ़वार होती है।

● एक वयस्क बटेर को प्रतिदिन 14 कि.ग्रा. आहार की आवश्यकता होती है।

● अंडा उत्पादन करने वाली एक बटेर को एक दिन में 18 से 20 ग्राम दाना जब कि मांस उत्पादन करने वाली एक बटेर को 25 से 28 ग्राम दाना लगता है।

● पाँच सप्ताह की उम्र तक एक किलो ग्राम मांस पैदा करने के लिये 2.5 किलो ग्राम दाने की आवश्यकता पड़ती है।

चूजों की देखभाल



बटेर के बच्चे का वजन लगभग 7 ग्राम होता है। इसलिए उसकी देखभाल काफी सावधानीपूर्वक करनी पड़ती है। शुरुआती दिनों में बटेर के चूजों पर विशेष ध्यान देना होता है। क्योंकि पहले सप्ताह में चूजों का मृत्यु दर अधिक देखा जाता है।

● चूजों का पालन जमीन पर डीप लीटर पद्धति या बैटरी बूडर में किया जाता है।

● चूजों को 3-4 सप्ताह के बाद तापक्रम की आवश्यकता नहीं रहती है। इसलिए उन्हें ग्रीवर घर में रख दें।

● चूजों को कैनिबलिज्म नाम के रोग से बचाने के लिए चार सप्ताह की उम्र में चूजों के ऊपर के चोंच को थोड़ा काट दें।

● बटेर मादा 75 प्रतिशत अंडे शाम के समय (दोपहर 3-6) देती है।

रोज की सफाई एवं रखरखाव स्वच्छ पानी की व्यवस्था और उचित वेंटिलेशन यह पर्यावरण को रोग मुक्त रखने में मदद करता है।

बटेर में होने वाली प्रमुख बिमारियों में अलसरॉटिव इंटेस्टाइटिस यह जीवाणु जनित बीमारी है। इसमें इंटेस्टाइन में अल्सर हो जाते हैं। इसके रोकथाम के लिए लीटर की सफाई पर ध्यान दें कॉक्सीडियोसिस यह बीमारी खराब रखरखाव के कारण फैलती है और हिस्टोमोनियसिस इसके बचाव के लिए समय-समय पे डीवर्मिंग करवायें।

बटेर की बिक्री

बटेर को बाजार में बेचने की उम्र लगभग पाँच सप्ताह की होती है।

सावधानियां

- चूजे मान्यता प्राप्त हैचरी से ही लें।
- चूजों को संतुलित आहार दें।
- दाना-पानी वाले बरतनों को दिन में कम से कम एक बार साफकरें।
- बीमार और कमजोर पक्षियों को अलग रखें।

● बटेर की सही शारीरिक बढ़वार के लिए संतुलित आहार की जरूरत होती है।

रोग प्रबंधन

मुर्गियों की तुलना में बटेर में रोग कम होते हैं।

अंडों की देखभाल

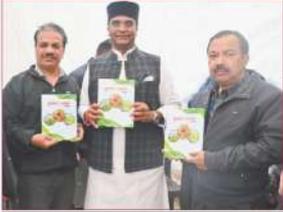
- एक अंडे का वजन लगभग 7-15 ग्राम होता है।
- अंडे काले डॉट्स के साथ सफेद होते हैं।
- बटेर के अंडे का स्फुटन (हेंचिंग) कृत्रिम तरीके से इनक्यूबेटर में आसानी से किया जा सकता है।
- अंडों को सेने के लिए तापमान और नमी पर विशेष रूप से ध्यान देना होता है।
- अंडा सेने के समय 0-14 दिनों तक तापमान 99.50 फारेनहाइट और नमी 87 प्रतिशत होनी चाहिए। इसके बाद 15-17 दिनों तक तापमान 98.50 फारेनहाइट एवम नमी 90 प्रतिशत हो।
- 14 दिनों तक एक निश्चित समय पर अंडों का उलटना-पलटना जरूरी होता है। उसके बाद अंडों को इनक्यूबेटर से हेंचिंग मशीन में रख दिया जाता है। तब 18वें दिन से अंडों से चूजे निकलना शुरु होते हैं।
- मुर्गी अंडे की तुलना में बटेर के अंडे में 2.47 कम वसा होता है।
- 5 सप्ताह के आयु के बाद बटेर के चूजों को जमीन पर या पिंडो में रखा जा सकता है।
- जमीन पर लीटर को फैलाकर रखा जा सकता है। उसकी मोटाई 10 से.मी. तक पर्याप्त है।
- 8 से 12 बटेर को 2.5 से 3 वर्ग फीट स्थान में रखा जा सकता है।



कृषि एवं सहकारिता मंत्री को कृषक जगत डायरी 2026 भेंट



प्रदेश के कृषि मंत्री श्री ऐदुल सिंह कंधाना, सहकारिता एवं खेलकूद तथा युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सांगी को कृषक जगत डायरी 2026 भेंट की गई। इस अवसर पर कृषक जगत के मैनेजिंग डायरेक्टर अजय बोर्दिया, कृषि मंत्री के ओएसडी श्री अशोक कुमार बाधम, निज सहायक श्री शिव इरोड़े एवं कृषक जगत के अतुल सक्सेना तथा प्रकाश दुबे उपस्थित थे।



गत वर्ष से 8 लाख मीट्रिक टन अधिक हुई धान खरीदी

एमएसपी पर 51 लाख 75 हजार मीट्रिक टन खरीदी धान



भोपाल (कृषक जगत)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजगुरु ने बताया है कि धान उपार्जन के लिये निर्धारित तिथि 20 जनवरी तक गत वर्ष से 8 लाख 22 हजार मीट्रिक टन अधिक धान की खरीदी हुई है। इस वर्ष 7 लाख 62 हजार 629 किसानों से 51 लाख 75 हजार 4 मीट्रिक टन धान की खरीदी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर की गई है। उन्होंने बताया है कि गत वर्ष 43 लाख 52 हजार 905 मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई थी। धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2369 रुपये प्रति क्विंटल है। किसानों को अभी तक 9485 करोड़ रुपये से अधिक राशि का भुगतान भी किया जा चुका है।

उल्लेखनीय है कि धान विक्रय के लिये 8 लाख 59 हजार 822 किसानों ने पंजीयन कराया था। एक दिवसपर से शुरू हुई धान खरीदी के लिये विभिन्न जिलों में 1436 केन्द्र बनाये गये थे। क्रय की गयी धान की 84 प्रतिशत मात्रा 43 लाख 55 हजार 879 मीट्रिक टन का परिवहन किया जा चुका है।

श्री किंग्सली उद्यानिकी सचिव, श्री कापसे उपसचिव कृषि बने

आईएसए अधिकारियों के तबादले

भोपाल। राज्य शासन ने गत दिनों 26 आईएसए अधिकारियों को पदस्थापना में फेरबदल किया है। जिसमें नन्दियाजी विकास के सचिव जॉन किंग्सली ए. को सचिव उद्यानिकी तथा सामान्य प्रशासन के उपसचिव श्री दिलीप कुमार कापसे को उप सचिव कृषि पदस्थ किया गया है। नूनिता अधिकारियों में - श्री शिवशंकर शुक्ला अपर मुख्य सचिव संस्कृति एवं पर्यटन को अपर मुख्य सचिव, श्री उमाकांत उमवार प्रमुख सचिव खनिज साधन, पशुपालन एवं डेयरी को प्रमुख सचिव पशुपालन एवं डेयरी, श्री शोभित जैन मन्त्र्य सचिव, राज्य उपभोक्ता प्रतिरोधण को प्रमुख सचिव आयुष, श्री आलोक कुमार सिंह प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश राज्य सहकारी विपणन संघ तथा सचिव मुख्यमंत्री (अतिरिक्त प्रभार) को सचिव मुख्यमंत्री तथा खनिज साधन (अतिरिक्त प्रभार), श्री अनुराग चौधरी अपर सचिव चिड़ड़ा बर्ग एवं अन्य संरक्षक कल्याण को प्रबंध संचालक म.प्र. मन्त्र्य महासंघ तथा अपर सचिव मधुआ कल्याण तथा मन्त्र्य विकास विभाग (अतिरिक्त प्रभार), श्री वीरेंद्र कुमार अपर सचिव नवीन अपर सचिव एवं नवकरणीय ऊर्जा को अपर आयुक्त (राजस्व), सुधी निधि निवेदिता प्रबंध संचालक मध्य प्रदेश मन्त्र्य महासंघ भोपाल तथा अपर सचिव मधुआ कल्याण तथा मन्त्र्य विकास विभाग (अतिरिक्त प्रभार) को आयुक्त महिला एवं बाल विकास, प्रबंध संचालक महिला वित्त एवं विकास निगम, श्री दिलीप कुमार यादव उप सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास को प्रबंध संचालक मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम, श्री दिलीप कुमार कापसे उप सचिव सामान्य प्रशासन को उप सचिव कृषि, श्रीमती मलिका निगम नागर उप सचिव स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण को उप सचिव राजस्व, श्रीमती वंदना शर्मा उप सचिव वाणिज्यिक कर को सचिव मध्य प्रदेश राज्य सूचना आयोग।

किसानों को प्रशिक्षण के लिए अग्रणी संस्थानों में भेजेगी सरकार : श्री कुशवाह

उद्यानिकी मंत्री ने जलगांव के जैन हिल्स में उन्नत उद्यानिकी व सिंचाई परियोजनाओं का किया निरीक्षण

भोपाल (कृषक जगत)। उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा है कि मध्यप्रदेश के किसानों को आधुनिक खेती की तकनीकों से जोड़ने के उद्देश्य से अधिकारियों के नेतृत्व में उन्नत कृषि संस्थानों में प्रशिक्षण हेतु भेजा जाएगा। इससे राज्य में उद्यानिकी और कृषि उत्पादन को नई दिशा एवं गति मिल सकेगी। श्री कुशवाह गतदिनों महाराष्ट्र के जलगांव स्थित जैन हिल्स, जैन वैली टाकरखेड़ में उन्नत उद्यानिकी योजनाओं के तहत संचालित आधुनिक उद्यानिकी उपकरणों, नर्सरी



एवं सिंचाई परियोजनाओं का निरीक्षण करते पहुंचे। निरीक्षण के दौरान श्री कुशवाह ने उद्यानिकी के क्षेत्र में कार्यरत प्रगतिशील किसानों से संवाद किया और उनके अनुभवों एवं नवचार्जों की जानकारी प्राप्त

की। उन्होंने जैन इरिगेशन फार्म और रिसर्च सेंटर, टियूयू कल्चर लेबोरेटरी, खाद्य प्रसंस्करण इकाई तथा उच्च उत्पादन वाली आधुनिक खेती प्रणालियों का भी अवलोकन किया।

इस अवसर पर उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से विस्तृत चर्चा कर यह जानकारी प्राप्त की कि आधुनिक कृषि उपकरणों एवं तकनीकों का प्रभावी उपयोग कर उद्यानिकी फसलों से अधिकतम उत्पादन

कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है। उन्होंने विदेशों में निर्यात के लिए अपनाई जा रही उन्नत कृषि तकनीकों को भी जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान मंत्री श्री कुशवाह ने विष्किम, रावस्थान के झालावाड़, मध्यप्रदेश के उज्जैन, महाराष्ट्र के बुलढाण समेत देश के विभिन्न राज्यों से नवीन कृषि तकनीकों का अध्ययन करने आए कृषि विद्यार्थियों और किसानों से संवाद किया और उन्हें उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

अन्नदाता

पराली न जलाएं, धरती और जीवन बचाएं

उपजाऊ शक्ति में वृद्धि | प्रदूषण से मुक्ति | अर्थव्यवस्था को गति



मिट्टी के रूप में मिले वरदान को नष्ट होने से बचाएं

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

ये विकल्प अपनाएं

हार्वेस्टर के साथ स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम यंत्र का उपयोग

हैप्पी सीडर और सुपर सीडर का उपयोग कर सीधी बोनी

रीपर से कटाई के बाद जीरो टिलेज मशीन से सीधी बोनी

बेलर मशीन का उपयोग कर धान की पराली और मक्के के तने के वेल्स बनाएं

धान की पराली का प्लेट्स, ब्रिक्स और बायो फर्टिलाइजर के निर्माण में उपयोग



पराली हटाने के यंत्र farmer.mpdpage.org पर सरीरें या JFarm Services app के जरिए किराये से प्राप्त करें

प्राकृतिक खेती को अपनाएं

मिट्टी की सतह पर सूक्ष्म जीवों के बढ़ावे से मिट्टी की ऊर्वर शक्ति में वृद्धि

रासायनिक पदार्थों से मुक्त होने से

कैंसर जैसी घातक बीमारियों से मुक्ति

प्राकृतिक खेती से उत्पादन में कोई कमी नहीं

आड़ये, स्वस्थ मिट्टी, स्वच्छ पर्यावरण और स्वस्थ जीवन के लिए पराली न जलाने का प्रण लें....

कृषि वैज्ञानिकों ने आलू परियोजना का किया निरीक्षण



छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के द्वारा गठित केंद्रीय निरीक्षण दल जिसमें प्रधान वैज्ञानिक डॉ.अनिल चौधरी व डॉ.एस.के. मौर्या एवं पूना कृषि महाविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ.गणेश बनसोडे ने गत दिनों आंचलिक कृषि अनुसंधान केंद्र छिंदवाड़ा सह संचालक डॉ.आर.सी.शर्मा के मार्गदर्शन में निरीक्षण कार्य संपन्न किया गया।

अखिल भारतीय आलू समन्वित परियोजना प्रभारी व वैज्ञानिक डॉ.शिखा शर्मा ने वर्ष 2025-26 के पौध सुधारक, पौध उत्पादन एवं पौध संरक्षण के प्रायोगिक कार्यों की जानकारी दी। डॉ.संध्या बकोडे ने फसल सुधारक के प्रयोगों को विस्तार से बताया। डॉ.शर्मा, डॉ.गौरव महाजन एवं डॉ.करुणा मेश्राम ने फसल उत्पादन संबंधी प्रयोगों की वैज्ञानिक चर्चा करते हुए उसके

निरीक्षण दल ने केंद्र में संचालित आलू परियोजना के प्रायोगिक कार्यों की सराहना करते हुए सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं श्रमिकों को बधाई दी। साथ ही केंद्रीय निरीक्षण दल ने ग्राम टेकाडी में आलू कृषकों के प्रक्षेत्र का भ्रमण एवं उन्हें मार्गदर्शन प्रदान किया। साथ ही ग्राम पंचायत टेकाडी में एक दिवसीय प्रशिक्षण जिसमें आलू की वैज्ञानिक खेती, फसल सुधार, फसल संरक्षण एवं छिंदवाड़ा जिले के लिए आलू की उन्नत किस्मों के बारे में कृषकों को विस्तार से जानकारी प्रदान की।

परिणाम के आधार पर निरीक्षण दल के साथ चर्चा की और फसल संरक्षण प्रयोगों की डॉ. शर्मा ने निरीक्षण दल को विस्तार से समझाया।

नील क्रांति से बदली असलम खान की तकदीर

छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। जिले के विकासखण्ड जामई के ग्राम दातला निवासी श्री असलम खान आज जिले में मत्स्यबीज उत्पादन के क्षेत्र में एक सफल एवं प्रेरणादायी उद्यमी के रूप में पहचाने जाते हैं। लेकिन यह सफलता उन्हें सहज ही नहीं मिली। इसके पीछे उनका संघर्ष, मेहनत और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग छिपा है।

पूर्व में श्री असलम खान वर्षा ऋतु के दौरान नदियों एवं तालाबों से अंडे वाली मछलियाँ एकत्र कर पारंपरिक (देशी) पद्धति से मत्स्यबीज उत्पादन करते थे। सीमित संसाधनों और

तकनीकी ज्ञान के अभाव में उनका उत्पादन बहुत कम होता था। परिणामस्वरूप वे प्रतिवर्ष केवल 20 से 50 लाख मत्स्यबीज ही तैयार कर पाते थे, जिससे उनकी वार्षिक आय मात्र रु. 40,000 से रु. 50,000 तक सीमित रह जाती थी। वर्ष 2018 में उन्होंने मत्स्य विभाग से संपर्क किया और मत्स्य विभाग छिंदवाड़ा के माध्यम से भारत सरकार की नीलक्रांति योजना के अंतर्गत

भारिया जनजाति को दिया पशुपालन प्रशिक्षण

छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। कलेक्टर श्री हरेंद्र नारायण एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अग्रिम कुमार के निर्देशन में जिले की जनपद पंचायत जुन्नारदेव में मुख्यमंत्री दुग्ध पशु प्रदाय विशेष पिछड़ी जनजाति भारिया के लिये पशुपालन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। म.प्र. शासन जनजाति मंत्री परिषद सदस्य श्रीमती उर्मिला भारती द्वारा योजना के अंतर्गत हितग्राहियों से आह्वान किया गया कि वह पशुओं की देखभाल अच्छे से करें, जिससे अधिक से अधिक दुग्ध उत्पादन हो सके। इस



अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्रीमती कामिनी ठाकुर द्वारा हितग्राहियों से कहा गया कि वह पशुओं को धन के समान मानें और उसे संभाल कर रखें।

इस अवसर पर विकासखण्ड जुन्नारदेव के ग्राम माली के हितग्राही श्री रामकिशोर भारती

द्वारा बताया गया कि वह योजना के लाभ के पूर्व वह राजमिस्त्री का कार्य करते थे। घर से बाहर जाकर रोजगार प्राप्त होता था, किन्तु योजना से प्राप्त भैंसों से दुग्ध व्यवसाय कर वह अपने घर पर ही रहकर आजीविका चला रहे हैं। विकासखंड तमिया के ग्राम छिंदी निवासी श्री सनकी भारती द्वारा बताया गया कि योजना से उन्हें काफी लाभ प्राप्त हुआ है और दुग्ध व्यवसाय से प्राप्त आय से उन्होंने एक कृषि कार्य के लिये ट्रैक्टर क्रय किया है। प्रशिक्षण में उप संचालक पशुपालन एवं डेयरी विभाग डॉ. एच.जी.एस.पक्षवार द्वारा योजना की सम्पूर्ण जानकारी प्रदान की गई। साथ ही किस प्रकार से पशुओं का पालन करना है। पशुओं के लिये पशु पोषण, नरल सुधार, पशु स्वास्थ्य की जानकारी प्रभारी सिविल सर्जन डॉ.छत्रपाल टाण्डेकर, सहायक संचालक डॉ.बलराम सलेवार, प्रभारी पशु चिकित्सा विस्तार अधिकारी जुन्नारदेव डॉ.अंकित मेश्राम व पशु चिकित्सा विस्तार अधिकारी छिंदवाड़ा डॉ.लोकेश बेलवंशी द्वारा दी गई।

5 करोड़ तक पहुंचा मत्स्य बीज उत्पादन, 8 लाख हुई वार्षिक आय

मत्स्य बीज उत्पादन इकाई की स्थापना के लिए आवेदन किया। योजना के अंतर्गत उन्हें रु. 25 लाख की इकाई लागत पर रु. 10 लाख का अनुदान स्वीकृत हुआ। इसके बाद उन्होंने अपनी निजी भूमि पर आधुनिक एवं वैज्ञानिक तकनीकों से युक्त मत्स्य बीज उत्पादन इकाई की स्थापना की।



नई तकनीकों को अपनाते और वैज्ञानिक पद्धति से कार्य करने का परिणाम यह हुआ, कि जहाँ पहले उनका उत्पादन सीमित था, वहीं अब वे प्रतिवर्ष 4 से 5 करोड़ मत्स्य बीज का उत्पादन करने लगे हैं। उत्पादन में इस अभूतपूर्व वृद्धि से उनकी आय में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वर्तमान में श्री असलम खान प्रतिवर्ष रु. 6 से रु. 8 लाख तक की शुद्ध आय अर्जित कर रहे हैं। श्री असलम खान की यह इकाई आज न केवल उनकी सफलता की कहानी है, बल्कि क्षेत्र के अन्य मत्स्य कृषकों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बन चुकी है।

जागृति यात्रा के लिए श्यामनारायण ने बढ़ाया क्षेत्र का गौरव

12 राज्यों में विभिन्न नवाचार केंद्रों का किया भ्रमण

(दिलीप दसौधी, कृषक जगत, मंडलेश्वर)। मंडलेश्वर निवासी श्री श्यामनारायण विश्वकर्मा (25) आरएके कृषि महाविद्यालय, सीहोर में एमएससी (कीट विज्ञान) के अंतिम वर्ष के छात्र हैं, जिनका चयन जागृति यात्रा के तहत देश भर के उन 525 युवाओं के साथ लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के उपरांत हुआ था, जो युवा उद्यमी के रूप में स्टार्टअप के माध्यम से अपना भविष्य संवार रहे हैं। श्री विश्वकर्मा स्वफल फाउंडेशन के कोफाउंडर और सीईओ हैं। नवंबर में रेल से को गई इस 15 दिवसीय यात्रा में 12 राज्यों में 8 हजार किमी का सफर तय कर प्रतिभागियों ने देश के विभिन्न शहरों में प्रमुख औद्योगिक, शैक्षणिक और सामाजिक नवाचार केंद्रों का भ्रमण कर प्रमुख उद्योगपतियों, स्टार्टअप फाउंडर्स, सामाजिक उद्यमियों से संवाद कर उनसे उद्यमिता के गुर सीखे।

हटकर बदलाव लाना चाहते हैं। 12 राज्यों में 8 हजार किमी की हुई इस यात्रा में प्रतिभागियों ने मुंबई, दिल्ली, वाराणसी, अहमदाबाद, जयपुर सहित अन्य प्रमुख शहरों का भ्रमण कर वहां की



श्री श्यामनारायण विश्वकर्मा ने कृषक जगत को बताया कि जागृति यात्रा में शामिल 525 युवा अपने स्टार्टअप के माध्यम से देश में लोक से

कार्यशैली को देखा। उड़ीसा के गंजम में ग्राम विकास संस्था द्वारा किए जा रहे वेस्ट मैनेजमेंट

को देखा, तो दिल्ली में सामाजिकता के तहत किए जा रहे मानवीय सहयोग के कई रूप देखने को मिले। इसरो की गए। विशाखापत्तनम और कटक जैसे केंद्रों पर ग्रामीण उद्यमियों से मिलकर यह सीखा कि कैसे छोटे स्तर पर नवाचार कर कृषि को लाभ का सौदा बनाया जाए। इस यात्रा के दौरान यह विश्वास दृढ़ हुआ कि उद्यमिता से देश में बदलाव लाया जा सकता है। प्रतिभागियों ने लोकतंत्र के मंदिर (संसद) में आत्म निर्भर भारत के संकल्प को आगे बढ़ाने का संकल्प

फाउंडेशन के कोफाउंडर और सीईओ हैं। वे एक विशिष्ट कार्य प्रणाली पर कार्य करने का विचार रखते हैं।

उनका कहना है कि कीट विज्ञान के ज्ञान को प्राचीन आध्यात्मिक पद्धतियों के साथ जोड़कर खेती को रसायन मुक्त टिकाऊ बनाया जा सकता है। बायोडायोनेमिक्स के जरिए इसे किया जा सकता है। अध्यात्म और विज्ञान के सफल मेल की उनकी इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य यह समझना था कि कैसे 'प्रकृति, आध्यात्मिकता और आधुनिक विज्ञान' का संतुलन खेती की लागत कम कर किसानों की आय बढ़ा सकता है। जिस प्रकार प्रकाश संश्लेषण में सूरज की प्रमुख भूमिका रहती है, वैसे ही चंद्रमा की ऊर्जा का कैसे उपयोग किया जाए यह विचारणीय है। इसी तरह अन्य ग्रहों के अध्ययन के साथ ही औषधीय पौधों का इस्तेमाल भी रसायन मुक्त खेती में मदद कर सकता है। जागृति यात्रा से लौटने के बाद अब वे अपने इस अनुभव को क्षेत्रीय किसानों के साथ साझा करने की योजना बना रहे हैं। उनका मानना है कि जागृति यात्रा ने उनके इस विचार को और मजबूती दी है कि भविष्य की खेती रासायनिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और वैज्ञानिक होगी। उनका लक्ष्य है कि अपने वैज्ञानिक शोध और आध्यात्मिक सिद्धांतों से किसानों के चेहरों पर मुस्कान ला सकें।

लिया। उल्लेखनीय है कि श्री विश्वकर्मा स्वफल

समस्या - समाधान

समस्या- खीरा या कद्दूकर्मण्य फसलों में सफेद इल्ली के कारण फल सड़ जाते हैं, उपाय बतायें, कीटनाशक नहीं डालना चाहता हूँ।
-लक्ष्मण पाटीदार



समाधान- खीरा तथा अन्य कद्दूकर्मण्य फसलों में फलों की मक्खी का प्रकोप होता है, जिसके कारण फल अन्त में सड़ जाते हैं। मादा मक्खी फलों की त्वचा के नीचे अपने अंडे देती है। उस स्थान पर गोंद जैसा पदार्थ उन्हें ढंक लेता है, इसको हटाने पर आपको सफेद लम्बे 5-6 अंडे दिखाई दे जायेंगे। इनसे इल्ली निकलती है जो फल को अन्दर ही अन्दर नष्ट करती है और फल सड़कर अन्दर काले पड़ जाते हैं। इल्ली विकसित होने पर बाहर निकल कर भूमि में शंखी में परिवर्तित हो जाती है।

● बिना कीटनाशक के फलों की मक्खी के नियंत्रण के लिए नियमित निराई गुड़ाई करते रहें जिससे शंखी मक्खी में विकसित न हो पाये।
● ग्रसित फलों को तोड़कर गहरे गड्ढे में गाड़ दें ताकि उससे विकसित मक्खी न निकल पाये।

● खेत में श्यामा तुलसी का प्रपंच लगायें इसके लिए एक चौड़ी कांच की बोतल में कीप लगा दें तथा बोतल में श्यामा तुलसी की कुछ पत्तियों को मसल कर रख दें। इससे फलों की मक्खी उसके प्रति आकर्षित होगी और बोतल में एकत्र हो जाएगी। कीप का छेद छोटा होने के कारण वे बाहर नहीं आ पायेंगी।

● फलों की मक्खी के लिए मिथाईल ड्यूसीनाल नामक पदार्थ भी विकसित किया गया है जो आम की मक्खी के लिए उपयुक्त पाया गया है जो नर मक्खी को आकर्षित करता है, प्रयोग भी किया जा सकता है।

समस्या- बैंगन की में जड़ों में गांठें पड़ गयी थी। आगे क्या- क्या सावधानी रखें?

- हीसीलाल रेकवार

समाधान- ● बैंगन व उसकी जाति की अन्य फसलों टमाटर, मिर्च आदि में सूत्रकृमि (निमोटोड)

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें। एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें। वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

के कारण जड़ों में गांठें पड़ जाती हैं।

● यह सूत्रकृमि मेलोडोगायनी स्पीसिज कहलाता है। इसका प्रकोप होने पर फसल की जड़ें पोषक तत्व अवशोषित नहीं कर पाती हैं और पौधों की पत्तियों पर यह लक्षण दिखते हैं। पत्तियां पीला पड़ कर सिकुड़ने लगती हैं व पौधे बौने रह जाते हैं।

● इस कारण फूल व फलों की संख्या में बहुत कमी आ जाती है।
● आगामी फसल के लिए आप उस खेत में बैंगन, टमाटर, मिर्च की फसल 2-3 वर्ष तक न लगायें, कोई अन्य फसल लें।
● बैंगन जिस खेत में ले रहे हों तो 1-2 कतार के बाद गोंदा लगा दें इससे सूत्रकृमि नहीं पनप पायेगा।

● रोगग्रस्त खेतों की गर्मी में गहरी जुताई अवश्य कर लें।
● पौधों की नर्सरी ग्रसित खेत में न लगायें।
● नर्सरी में बीज बोने के पूर्व 10 ग्राम कार्बोपथुरान प्रति वर्ग मीटर की दर से डालें। रोपाई के पूर्व पौधों को थायोजानिक दवा के 500 पीपीएम (5 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी) के घोल में 15 मिनट तक डुबाकर रखें।

● कार्बोपथुरान 3 प्रतिशत के दानों को रोपा पूर्व 10 किलो प्रति एकड़ के मान से मिट्टी में मिला दें।

● इन उपायों से सूत्रकृमि को नियंत्रित करने में सहायता मिलेगी।

समस्या- अरबी की फसल बीमारी के कारण नष्ट हो जाती है, नियंत्रण के उपाय बतायें।

- काशीराम पटेल



समाधान- ● अरबी की फसल में पिछेती झुलसा का प्रकोप मुख्य रूप से आता है। प्रकोप के आरम्भ में पत्तियों में धब्बे दिखते हैं जो बाद में फैल जाते हैं और अन्त में पूरी पत्ती झुलस कर नष्ट हो जाती है। अधिक नमी अवस्था में यह ज्यादा फैलता है।

● बुआई के लिए रोगग्रस्त खेत के बीज का उपयोग करें।

● बीज को वीटावेक्स 2 ग्राम प्रति किलो बीज के मान से बुआई पूर्व उपचारित कर लें।

● फसल में संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें। इस फसल को पोटाश की भी आवश्यकता होती है। इसलिए प्रति एकड़ 40 किलो पोटाश बुआई के पूर्व भी अवश्य दें। यह पौधों में कीटों तथा रोगों के प्रति प्रतिरोधी क्षमता भी उत्पन्न करता है।

● खड़ी फसल में रोग के धब्बे दिखते ही ताम्रयुक्त फफूंदी नाशक 1.25 किलो ग्राम या मेन्कोजेब के 800 ग्राम का प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें। छिड़काव के लिए घोल की मात्रा 200 लीटर प्रति एकड़ अवश्य रखें।

प्राकृतिक खेती - अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

जैविक उपज की मार्केटिंग/बिक्री क्या भारतीय बाजार में जैविक उपज की मांग है?

हाँ, ग्राहकों में बढ़ती हेल्थ अवेयरनेस के कारण जैविक उपज की मांग बढ़ रही है।

मैं अपने जैविक उत्पाद की लोकल और क्षेत्रीय स्तर पर मार्केटिंग और बिक्री कैसे कर सकता हूँ?

जैविक उत्पाद में दिलचस्पी रखने वाले ग्राहकों तक पहुँचने के लिए स्थानीय किसानों के मार्केट, ऑर्गेनिक फूड स्टोर, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और डायरेक्ट बिक्री के बारे में जानें।

क्या जैविक उत्पाद के लिए सर्टिफिकेशन प्रोसेस हैं, और क्या मुझे सर्टिफाइड होने के बारे में सोचना चाहिए?

ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन ऑप्शनल है, लेकिन इससे मार्केट के मौके बढ़ सकते हैं। NPOP और PGS-इंडिया जैसी सर्टिफिकेशन एजेंसियाँ ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन देती हैं।

भारतीय बाजार में जैविक फसलों के लिए संभावित मूल्य प्रीमियम क्या है?

जैविक फसलों की कीमतें अक्सर ज्यादा होती हैं, लेकिन प्रीमियम मूल्य फसल के टाइप, लोकेशन और मार्केट की मांग जैसे बिन्दुओं के आधार पर अलग-अलग होते हैं।

चुनौतियाँ और चिंताएँ

प्राकृतिक खेती करने वाले भारतीय किसानों को आमतौर पर किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

चुनौतियों में कीट और रोग प्रबंधन, जानकारी की कमी, बदलाव का विरोध और मार्केटिंग की मुश्किलें शामिल हो सकती हैं।

प्राकृतिक खेती में फसल की पैदावार और आमदनी में होने वाले उतार-चढ़ाव से मैं कैसे निपटूँ?

फसलों में अलग-अलग तरह की फसलें उगाएँ, इमरजेंसी फंड बनाएँ, और उतार-चढ़ाव को मैनेज करने के अनुभव और तरीके साझा करने के लिए किसान समूहों में हिस्सा लें।

क्या प्राकृतिक खेती के तरीकों से कोई जोखिम जुड़े हैं?

रिस्क में कीट फैलने या मौसम की वजह से फसल का नुकसान शामिल है, लेकिन इन्हें अक्सर योजना प्लानिंग से कम किया जा सकता है।

मैं प्राकृतिक खेती को लेकर पारंपरिक किसानों या परिवार के सदस्यों के विरोध से कैसे निपट सकता हूँ?

बातचीत करें, सफलता की कहानियाँ शेयर करें, और धीरे-धीरे सपोर्ट पाने के लिए प्राकृतिक खेती के फायदे दिखाएँ।

कृषक जगत

बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 95	सब्जियों में पोष संरक्षण रु. 75	मशरूम एक लाभ अनक रु. 45	मिर्च की उन्नत खेती रु. 55	केला उत्पादन रु. 70	गुलाब बहुमूल्य संशोधित संस्करण रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता रु. 55	अदरक रु. 55	फलों की खेती से बगिया रु. 75	सजाएं फूलों से बगिया रु. 65	घर की बगिया रु. 95
-----------------	----------------	---------------------------------	--------------------------------	-----------------------

कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/

मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए, किताब कोड नं. पर निशान लगाएं

016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050

नाम _____
ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____
जिला _____ फोन/मोबा. _____

कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____
संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी ऑर्डर रसीद क्र. _____ जौ.पी. भेजें

संख्याओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियाँ खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीऑर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एच.पी. नगर, भोपाल - 462011

फोन : 0755-4248100, 2554864, मो. : 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org

इंवीर : 331-332, आर्बिट माला, ए.बी. रोड, विजय नगर चौगहे के पास, इंवीर (म.प्र.) मो. : 9826021937

स्वास्थ्य

हमारे जीवन में सब्जियों का विशेष महत्व है सब्जियों को यदि हम पकाने की अपेक्षा यदि सलाद के रूप में कच्चा खाये तो वे अधिक पौष्टिक व गुणकारी होती हैं व शरीर में विभिन्न तत्वों की कमी को भी पूरा करती हैं वे सब्जियाँ हमारे लिए विशेष महत्व रखती हैं जिन्हें हम ताजा व कच्चा खा सकते हैं। हरी ताजी सब्जियाँ खाना हमारे स्वास्थ्य के लिए विशेष हितकारी होता है। इनको खाने से शारीरिक शक्ति बढ़ती है व मोटापा घटता है। ताजी सब्जियों में पोषक तत्व अधिक व कैलोरी कम होती हैं। सब्जियों को कच्चा खाने से व निरंतर इसका सेवन करने से खाना जल्दी हजम (पचता) होता है। भूख बढ़ती है रक्त शुद्ध होता है और शरीर की त्वचा में निखार आता है। हमारे भोजन में सलाद का विशेष महत्व है सलाद में हम उन कच्ची सब्जियों को ले सकते हैं तो हम कच्ची भी खा सकते हैं। सलाद का भोजन में मुख्य स्थान होने का कारण इनमें सभी विटामिनो, पौष्टिक तत्वों, लोह, फास्फोरस गंधक वसा कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन का होना मूली, गाजर, टमाटर, बंदगोभी, प्याज, हरी मिर्च, नींबू, अदरक को कच्चा खाने पर मूल रूप से अधिक से अधिक विटामिन प्राप्त होता है। जो शरीर को स्वस्थ बनायें रखने में सहायक होते हैं। मूली से विटामिन बी, सी, गाजर से

सलाद खाएं, सेहत बनाएं

विटामिन ए, सी, लोहा तथा शलजम से विटामिन बी, सी, की प्राप्ति होती है। प्याज से विटामिन बी, सी, गंधक व फास्फोरस पर्याप्त मात्रा में मिलता है। विभिन्न सब्जियों से हमें



टमाटर फूलगोभी कंदीय सब्जियाँ जैसे गाजर, मूली, शलजम, चुकंदर, प्याज एवं हरे पत्ते वाली सब्जियाँ जैसे सलाद, हरा धनिया, चने के पत्ते, मूली के पत्ते, पालक, बंदगोभी पोदीना और सोया इत्यादि। आजकल विदेशी सब्जियाँ जैसे लालगोभी, हरीगोभी ऐस्परेगस पार्सल इत्यादि को भी सलाद के रूप में बढ़े होटलों में उपयोग में लाया जाता है। इन सभी सब्जियों को प्रतिदिन सलाद में खाना सेहत के लिए लाभकारी रहता है। सलाद बनाते समय कुछ विशेष बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए जैसे:-

1. सलाद बनाने के लिए ताजी सब्जियों का चुनाव करें।
2. सलाद बनने से पहले सब्जियों व हाथों को अच्छी तरह से धो लें।
3. कभी भी सड़ी गली सब्जियों का प्रयोग न करें।
4. बहुत पहले से कटा हुआ सलाद खाने योग्य नहीं होता इसलिए सलाद खाने से कुछ पूर्व की काटे।
5. मूली, गाजर, शलजम, चुकंदर, खीरा, ककड़ी, प्याज गांठ गोभी इत्यादि को छीलने के बाद सलाद के लिए काटें।
6. सलाद काटने के लिए तेज छुरी या चाकू का उपयोग करें।
7. यदि सलाद पर नींबू या नमक डालना हो तो खाने से थोड़ा देर पहले डालें।

जो पौष्टिक तत्व व विटामिन मिलते हैं व आगे दिए गए हैं:- मौसम के अनुसार विभिन्न प्रकार की सब्जियों का सलाद के रूप में सेवन किया जाना चाहिए। इस सब्जियों को किसी भी समय ताजा खाया जा सकता है। खाना खाने से पूर्व अथवा खाना खाने के बाद या खाने के साथ विभिन्न आकारों में काटकर नींबू, नमक व सिरका मिलाकर बनाया गया स्वादिष्ट सलाद खाना अतिगुणकारी होता है। निम्नलिखित सब्जियों को सलाद के रूप में खाना उपयोगी रहता है। खीरा, ककड़ी,

सेहत में उपयोगी संतरे का शरबत

संतरा एक स्वास्थ्यवर्धक फल है यह सिर्फ स्वाद की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अच्छा होता है। सर्दियों में संतरे जैसा फल बहुत ही आसानी से उपलब्ध होता है। संतरे में प्रचुर मात्रा में विटामिन सी होता है एक व्यक्ति को जितनी विटामिन सी की आवश्यकता होती है वह एक संतरे को प्रतिदिन खाते रहने से पूरी हो जाती है। संतरे में लोहा और पोटेशियम भी काफी मात्रा में पाया जाता है संतरे के सेवन से शरीर स्वस्थ रहता है घुस्ती-फुर्ती बढ़ती है। संतरे की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विद्यमान फावट्रोजन, डेक्ट्रोजन, खनिज एवं विटामिन शरीर में पहुँचते ही ऊर्जा देना प्रारंभ कर देते हैं। संतरे के सेवन से हृदय तथा मस्तिष्क को नयी शक्ति व ताजगी मिलती है। अन्य खट्टे फलों की तरह संतरा एक शक्तिशाली प्राकृतिक एंटीआक्सीडेंट है। फाइबर तथा पेक्टिन की उपलब्धता के कारण संतरा अधिक वजन के लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। संतरे के अन्य लाभ इस प्रकार हैं:-

कैंसर का जोखिम कम:- प्रतिदिन संतरे के जूस के सेवन से किसी भी प्रकार के कैंसर की संभावना कम होती है क्योंकि संतरे के जूस में एण्टी ऑक्सिडेंट्स अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।



उच्च रक्तचाप के मरीज के लिए:- संतरे में मैग्नीशियम तथा पोटेशियम अधिक मात्रा में होते हैं, इसलिए यह उच्च रक्तचाप के मरीजों के लिए अच्छा है।

कोल्ड और फ्लू से बचाव के लिए:- विटामिन सी की अधिक मात्रा होने के कारण संतरे के सेवन से प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत बनती है और कोल्ड और फ्लू जैसे संक्रमण का खतरा कम होता है।

गठिया के मरीजों के लिए:- गठिया के मरीज भी संतरे का सेवन कर सकते हैं। इससे किसी प्रकार के दर्द से आराम मिलता है तथा वजन भी नियंत्रित रहता है।

घावों के भरने में:- संतरे के जूस में फोलेट पाया जाता है और फोलेट घावों को भरने में और नये सेल्स के निर्माण में मदद करता है।

संतरे का पोषण मान (1 संतरा, वजन

140 ग्राम) संतरा फल मौसमी होता है इसलिए संतरा फल का लाभ पूरे वर्ष लेने के लिए इसको निम्नलिखित विधि द्वारा संरक्षित किया जा सकता है।

संतरे का स्वैश आवश्यक सामग्री: संतरे का रस 1 लीटर चीनी 1.8 किलोग्राम, पानी 1.2 लीटर, साइट्रिक अम्ल 25-30 ग्राम, पोटेशियम मेटाबाइसल्फाइड 3 ग्राम, संतरे का इत्र 2 चाय चम्मच, संतरे का रंग आवश्यकतानुसार।

बनाने की विधि:

● ताजे पूरे पके हुए स्वस्थ संतरे लें और ठंडे पानी में अच्छी तरह धोयें।
● संतरे बीच में से आधे काटकर, रस निकालने वाले यंत्र से रस निकालें।
● रस को महीन कपड़े से छान लें।
● रस में चीनी मिला लें और मिश्रण को गर्म कर लें ताकि चीनी घुल जाए।
● रंग व खुशबू मिलाकर, छान लें।
● प्रति किग्रा. स्वैश में 610 मिग्रा. के एम. एस. (पोटेशियम मेटाबाइसल्फाइड) डालें तथा स्विश को साफ सूखी बोतलों में भर दें।
● उबाली हुई कार्क या डक्कन से बंद करें।
● बंद बोतल के कार्क वाले सिरे को पिघले मोम में उल्टा करके डुबोयें।

नोट: खाना खाने से उल्टा पहले या तुरंत बाद में संतरे के जूस का सेवन नहीं करना चाहिए। एसिडिटी के मरीजों को संतरे का जूस कम पीना चाहिए।

आठ पहर क्या हैं, जानिए

दिन-रात मिलाकर 24 घंटे में हिंदू धर्म अनुसार आठ पहर होते हैं। औसतन एक पहर तीन घंटे का होता है जिसमें दो मुहूर्त होते हैं। एक पहर तीन घंटे या साढ़े सात घंटी का होता है। एक घंटी 24 मिनट की होती है। दिन के चार और रात के चार मिलाकर कुल आठ पहर। भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग के गाने का समय निश्चित है। प्रत्येक राग पहर अनुसार निर्मित है।

आठ पहर के नाम- दिन के चार पहर- पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न और सायंकाल। रात के चार पहर- प्रदोष, निशिथ, त्रियामा एवं उषा। प्रत्येक पहर में गायन, पूजन, जप और प्रार्थना का महत्व है।

आठ पहर - एक पहर तीन घंटे का होता है। सूर्योदय के समय दिन का पहला पहर प्रारंभ होता है जिसे पूर्वाह्न कहा जाता है। दिन का दूसरा पहर जब सूरज सिर पर आ जाता है तब तक रहता है जिसे मध्याह्न कहते हैं।

इसके बाद अपराह्न (दोपहर बाद) का समय शुरू होता है, जो लगभग लगभग 4 बजे तक चलता है। 4 बजे बाद दिन अस्त तक सायंकाल चलता है। फिर क्रमशः प्रदोष, निशिथ एवं उषा काल।

अध्याम- वैष्णव मंदिरों में आठ पहर की सेवा-पूजा का विधान अध्याम कहा जाता है। वल्लभ सम्प्रदाय में मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, संध्या-आरती तथा शयन के नाम से ये कीर्तन-सेवाएं हैं। अध्याम हिन्दी का अपना विशिष्ट काव्य-रूप जो रीतिकाल में विशेष विकसित हुआ। इसमें कथा-प्रबंध नहीं होता परंतु कृष्ण या नायक की दिन-रात की चर्या-विधि का सरस वर्णन होता है।

स्वाद और सेहत से भरा भोजन

● गेहूँ के आटे में मौसमी सब्जियाँ या पकी हुई छिलके वाली दाल डालकर स्वादिष्ट परांठे बना सकते हैं व इसे दही व रायते के साथ खा सकते हैं यह संपूर्ण पौष्टिक आहार होगा।

● गेहूँ का दलिया या चावल की खिचड़ी बनाते समय उसमें गाजर, मटर, भुट्टे के दाने, धनिया, प्याज आदि डालिए स्वाद भी बढ़ जाएगा और पौष्टिक, विटामिन, कार्बोहाइड्रेट और रेशे की मात्रा भी बढ़ जाएगी।

● बेसन गट्टे बनाते समय पत्तेदार सब्जियाँ या लौकी किस कर मिला देने से गट्टे की सब्जी की पौष्टिकता बढ़ जाएगी।

● कड़ी में मटर या ताजी चवला फली के दाने या हरे चने, पालक, धनिया या मिक्स सब्जियाँ डाल सकते हैं. मीठा नीम बीमारियों से हमारी रक्षा करता है.

● टमाटर, गाजर, अमरूद, अंगूर, धनिया, पोदीना, करौदा, कैरी आदि की चटनी बनाकर हम विटामिन सी एवं फ्रूट शर्करा प्राप्त कर सकते हैं.

पाक्षिक पंचांग

26 जनवरी से 8 फरवरी 2026 तक

विक्रम संवत् 2082

माघ शुक्ल 8 से फाल्गुन कृष्ण 7 तक

दि.	माह	वार	तिथि/त्यौहार
26	जनवरी	सोम	माघ शुक्ल 8 गणतंत्र दिवस
27	जनवरी	मंगल	9 महानंद नवमी
28	जनवरी	बुध	10
29	जनवरी	गुरु	11 जया/अना एकारशी ब्रत
30	जनवरी	शुक्र	12 प्रदोष ब्रत
31	जनवरी	शनि	13/14
1	फरवरी	रवि	15 माघी पूर्णिमा/स्ना.दा. पूर्णिमा
2	फरवरी	सोम	फाल्गुन कृष्ण 1
3	फरवरी	मंगल	2
4	फरवरी	बुध	3
5	फरवरी	गुरु	4 गणेश चतुर्थी ब्रत
6	फरवरी	शुक्र	5
7	फरवरी	शनि	6
8	फरवरी	रवि	7

जनेकृवि - आधुनिक संस्कृति में

भारतीय गौवंश का महत्व, देशी नस्लों पर कार्यशाला



जबलपुर (कृषक जगत)। देशी गौवंश रक्षण एवं संवर्धन न्यास महाकौशल प्रांत, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर और मप्र गौसंवर्धन बोर्ड के संयुक्त तत्वाधान में आधुनिक संस्कृति में भारतीय गौवंश का महत्व एवं भारतीय देशी नस्लों की श्रेष्ठता विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन डॉ. गुरु प्रसाद सिंह, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय चारापत्नी के मुख्यआतिथ्य में हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में जनेकृवि के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा, डॉ. संजय वाते, श्री राजकुमार जैन, डॉ. एम. एच. के.वट, श्री सोहन विश्वकर्मा, श्री लाल बहादुर, वैद्या नंदनी भोजराज, वैद्या गरिमा तिवारी, श्री गजेन्द्र डहरवाल, श्री तुलाराम मंचासीन रहे। इस दौरान मुख्यअतिथि की आसंदी से डॉ. गुरु प्रसाद सिंह ने कहा कि भारतीय देशी गौवंश की उपयोगिता के

माध्यम से कृषि प्रधान भारत की कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं सुपोषण पर आधारित हो। कार्यशाला में मुख्यवक्ता श्री सुनील मानसिंहका, केन्द्रीय मंत्री, भारतीय गौवंश रक्षण संवर्धन परिषद ने अपने उद्बोधन में कहा कि एक मात्र गोबर और गोमूत्र ही, गाय को बचा सकता है, किसान को समृद्ध बना सकता है, बंजर होती भूमि को उर्वरा बना सकता है, शुद्ध जल व शुद्ध आहार दे सकता है, जिससे भारत देश परम वैभवशाली बन सकता है। दो दिवसीय कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री सतेन्द्र सिंह, प्रांत गौरक्षा प्रमुख, डॉ. गावस्कर वाली, अध्यक्ष देशी गौवंश रक्षण एवं संवर्धन न्यास एवं श्री उमेश मिश्र प्रांत मंत्री वि.हि.प. महाकौशल प्रांत की महती भूमिका है। कार्यशाला का संचालन डॉ. अमित शर्मा द्वारा किया गया।

कस्टम हायरिंग सेंटर नरवाई प्रबंधन करें : श्रीमती पटले

सिवनी (कृषक जगत)। पर्यावरण संरक्षण के साथ मिट्टी को उपजाऊ बनाए रखने के लिए नरवाई जलाने से रोकना आवश्यक है। जिले में संचालित कस्टम हायरिंग सेंटर प्रशासन के सहयोग करते हुए अपने क्षेत्र के किसानों को नरवाई प्रबंधन के यंत्र सुपर सीडर एवं हैपी सीडर उपयोग के लिए प्रेरित करना चाहिए। यह बात कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने बरघाट विकासखण्ड के ग्राम खमरिया में हितग्राही श्री हिमांशु बिसेन द्वारा संचालित कस्टम हायरिंग सेंटर का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान कलेक्टर ने सेंटर में उपलब्ध उन्नत कृषि यंत्रों की जानकारी ली तथा इन यंत्रों के माध्यम से स्थानीय किसानों को दी जा रही सुविधाओं पर चर्चा की। किसानों की मांग, विभिन्न कृषि यंत्रों के उपयोग, किराया व्यवस्था एवं इससे होने वाली आय की जानकारी प्राप्त की और ऐसे नवाचारों को

सुनिश्चित कर खेती को अधिक लाभकारी बनाने में महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर उप संचालक कृषि श्री एस.के. धुर्वे एवं सहायक संचालक उद्यान श्रीमती आशा उपवंशी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।



आर्या परियोजना में बकरी पालन पर प्रशिक्षण



धार (कृषक जगत)। कृषि विज्ञान केन्द्र, धार द्वारा उद्यमिता विकास हेतु आर्या परियोजना के अंतर्गत बकरी पालन विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान के मार्गदर्शन में किया गया, इसका मुख्य उद्देश्य बकरी पालकों को आधुनिक तकनीकों और वैज्ञानिक तरीकों से अवगत कराना है। डॉ. चौहान ने किसानों को सम्बोधित कर अपने विचार रखते हुए कहा कि बकरी पालन दोगुनी आय प्राप्त करने का एक उचित विकल्प है। किसान इसको कृषि कार्य के साथ करने पर अपनी अतिरिक्त आय अर्जन कर सकते हैं। कार्यक्रम को डॉ. रविन्द्र राठे, जिला पशु

चिकित्सालय, धार डॉ. अंकिता पाण्डेय, डॉ. आर. आर. अहिरवार, पशुपालन विभाग धार, केन्द्र के उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. मण्डलोई, डॉ. सुरेन्द्र एस मौर्य, पशुपालन विभाग धार ने बकरी पालन पर विस्तृत जानकारी दी। डॉ. प्रदीप किरार, पशुपालन विभाग धार, डॉ. दानवीर यादव, सहायक प्राध्यापक, वेटनरी कॉलेज, महु ने भी सम्बोधित किया। संचालन डॉ. अंकिता पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्री रीतेश जैन, श्री गौरव सारस्वत, श्री भूपेन्द्र कुमार कुर्मी, श्री गणेश निगवाल, श्री जितेन्द्र नायक, श्री जीवन निगवाल, श्री विरोध नलवाया ने विशेष सहयोग दिया। प्रशिक्षण में जिले के 30 किसानों/पशुपालकों को प्रशिक्षित किया गया।

मोटे अनाज की ब्रांड एम्बेसडर से कलेक्टर ने किया संवाद



डिंडोरी (कृषक जगत)। कलेक्टर श्रीमती अंजू पवन भदौरिया ने ग्राम पंचायत चाड़ अंतर्गत ग्राम सिलपिड़ी में मोटे अनाज की ब्रांड एम्बेसडर सुश्री लहरी बाई के निवास पर पहुंचकर उनसे संवाद किया। कलेक्टर के साथ मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री दिव्यांशु एवं प्रशासनिक अमला भी उपस्थित रहा। प्रशासनिक अधिकारियों को अपने घर पहुंचता देखकर सुश्री लहरी बाई ने प्रसन्नता व्यक्त की। कलेक्टर श्रीमती अंजू पवन भदौरिया ने सुश्री लहरी बाई, उनके पिता श्री सुखराम एवं माता श्रीमती चेंती बाई से उनका कुशलक्षेम जाना तथा मोटे अनाज (मिलेट्स) के संरक्षण, उत्पादन एवं उपयोग को लेकर विस्तृत चर्चा की। सुश्री लहरी बाई ने बताया कि उनके परिवार द्वारा तीन पीढ़ियों से मोटे अनाज की खेती की जा रही है। उन्होंने कहा कि उनकी दादी का सपना था कि मोटे अनाज की पहचान पूरे देश में बने और इसके उपयोग से लोगों का जीवन स्वस्थ बने।



कृषक जगत राष्ट्रीय कृषि अखबार



भोपाल-जयपुर-रायपुर



वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक

- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि

⇒ वार्षिक रु. 600/-
⇒ दो वर्ष रु. 1000/-
⇒ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह भोपाल जयपुर रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम

ग्राम

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें :

वि.ख.

जिला पिन [][][][][] राज्य

शिक्षा भूमि उच्च

ट्रेक्टर/मॉडल फोन/मो.

ई-मेल

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये नगर/हिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/

पनीआई/क्र. 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम Online Payment: SBI-A/C No. 53007193076, IFSC : SBIIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक <http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php> कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर **6262166222**

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

प्रसार प्रबंधक **कृषक जगत**

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org

जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952

रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो. : 9826255862

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864

नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952



कृषक जगत
अखबार के लिए
QR कोड स्कैन करें

एनएफएल डायरेक्ट सेल सेंटर का शुभारंभ



सीहोर (कृषक जगत)। नेशनल फर्टिलाइजर लि. (एनएफएल) ने जिला मुख्यालय पर उर्वरकों के सीधे विक्रय केन्द्र का शुभारंभ किया। केन्द्र के शुरू होने से किसानों को उर्वरक उपलब्धता आसान रहेगी। शुभारंभ अवसर पर एनएफएल के उप महाप्रबंधक श्री नरेंद्र बरगले, उप संचालक कृषि श्री अशोक कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय कार्यालय प्रभारी श्री अशोक खाखा सहित क्षेत्र के किसान एवं कंपनी के विक्रेता उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने संतुलित उर्वरक उपयोग, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन तथा केंद्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न कृषि कल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। 'किसान धन' डायरेक्ट सेल सेंटर पहल का मुख्य उद्देश्य किसानों को विश्वसनीय, पारदर्शी एवं सुलभ उर्वरक आपूर्ति उपलब्ध कराना है, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हो और किसानों की आय को सुदृढ़ किया जा सके।

कृषि अधिकारी सेवा मानकर कार्य करें : श्री भगत



रायसेन (कृषक जगत)। विभागीय कार्य के दौरान कृषि अधिकारी अपने कर्तव्यों को सेवा मानकर कार्य करेंगे तो निश्चित वह कार्य सफलतापूर्वक संपन्न होगा। फील्ड में किसानों की समस्याओं, जिज्ञासाओं का कुशलता से समाधान करने के लिए जानकारी से निपुण होना बहुत जरूरी है। उक्त विचारों को सुनने का अवसर नव वर्ष मिलान कार्यक्रम में मिला। उप संचालक कृषि कार्यालय की परम्परा अनुसार प्रत्येक नव वर्ष पर इस प्रकार का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसमें जिले के समस्त कृषि अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहते हैं। यह आयोजन जिला मुख्यालय स्थित विभाग के नवीन परिसर में

आयोजित किया। जिले के उप संचालक कृषि श्री के. पी. भगत ने अपने सम्बोधन में बीते समय की यादों को ताजा करते हुए अनुभव बताए। उन्होंने विभागीय कार्य को सेवा मानकर करने की बात कही। इस अवसर पर पूर्व उप संचालक कृषि श्री एन. पी. सुमन, अनुविभागीय अधिकारी कृषि श्री जी. एस. रैकवार, सहायक संचालक कृषि श्री सुनील कुमार सोने, श्री दुष्यंत धाकड़, श्री जितेंद्र नामदेव, सेवानिवृत्त अधिकारी श्री एस. के. दोहरे, श्री डी. एस. भदौरिया, श्री ओमप्रकाश मालवीय उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन खाद्य सुरक्षा मिशन के जिला सलाहकार श्री अशोक कुमार शर्मा द्वारा किया गया।

एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर को और अधिक विकसित किया जाए : श्री जैन

हरदा (कृषक जगत)। हरदा कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने जिले के कृषि विभाग के अधिकारियों को एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के क्षेत्र में कार्य करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि कृषि प्रधान हरदा जिले की पहचान स्मार्ट एग्रीकल्चर के रूप में होना चाहिए।

गत दिनों आयोजित कृषि, सहकारिता, पशुपालन, मत्स्य, उद्यानिकी, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति तथा अन्य संबंधित विभागों की समन्वय बैठक में कलेक्टर ने जिले में जैविक एवं प्राकृतिक खेती के विकास के क्षेत्र में सतत प्रयास करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि रासायनिक खेती से कृषि भूमि को हो रहे नुकसानों के संबंध में कृषकों को जानकारी



दी जाए। साथ ही अधिक से अधिक कृषकों को जैविक/प्राकृतिक खेती से जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि जिले में जैविक दूध उत्पादन की संभावनाएं भी तलाशी जाएं। जैविक दुग्ध उत्पादक पशुपालकों को पृथक से दुग्ध सहकारी समिति गठित की जाए। सहकारिता विभाग की समीक्षा के दौरान विभागीय अधिकारी द्वारा बताया गया कि जिले में शत प्रतिशत 52

सहकारी समितियां कम्प्यूटाईज्ड हो चुकी हैं और अब ये समितियां ई-पैक्स के रूप में कार्य कर रही हैं। उद्यानिकी विभाग के अधिकारी से जिले में उद्यानिकी के क्षेत्र में परिणाम मूलक कार्य करने की अपेक्षा की गई। कलेक्टर ने कहा कि कृषि क्षेत्र में उन्नत जिला उद्यानिकी में भी पीछे न रहे, यह सुनिश्चित किया जाए। इस दौरान उन्होंने विभागीय योजनाओं की प्रगति की भी समीक्षा की।

पन्ना जिले में ई-टोकन व्यवस्था शुरू, घर बैठे होगा उर्वरक के लिए पंजीयन

पन्ना (कृषक जगत)। कृषि विभाग द्वारा उर्वरक वितरण की तवीन ई-टोकन व्यवस्था आरंभ कर दी गई है। इस प्रणाली अंतर्गत उर्वरक कूपन जारी कर खाद का वितरण किया जाएगा। जिला

प्रशासन द्वारा भी पारदर्शी और सुगम सुविधा का लाभ प्राप्त करने का आग्रह किसानों से किया गया है। अब ई-टोकन के माध्यम से किसानों द्वारा मोबाइल के माध्यम से घर बैठे ही उर्वरक के लिए पंजीयन करवाया जा सकेगा। कृषक को लॉइन में नहीं लगना होगा। ई-टोकन प्राप्त

करने के लिए किसानों को <https://etoken.mpkri-ishi.org/> पोर्टल पर आधार कार्ड के जरिए पंजीयन करवाना होगा। इस व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिए जिला एवं स्थानीय स्तर पर कृषि अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण व मार्गदर्शन भी प्रदान किया जा रहा है।

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र 600 रूपये

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

- विज्ञापन के लिए निम्नलिखित कैटेगरीज-**
- बेचना/खरीदना- देवदर, टाली, शेरार, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
 - बीज
 - औषधीय फसल
- विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक**
- अधिकतम 25 शब्द
 - अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्ट्रिब्यूट क्लासीफाइड

- विज्ञापन दर - रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5% अतिरिक्त साइज**
- फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
- कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, देवदर, तीर्थ यात्राएं, आकर्षकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बाढ़दाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदान, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।**

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222

www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::

- कलसा सीड्स लि.
- बयोस्टेट इंडिया लि.
- वॉयर कोप साइंस
- मनुष्य एग्रोटेक लि.
- एफ.एम.सी. इंडिया प्रा. लि.
- प्रगटा केमिक्स लि.
- अतुल एंजिंक लि.
- रामा फॉस्फेट लि.
- जी.एन.एच.सी.
- इरेकीसाइड्स इंडिया लि.
- बी.ए.एस.एफ.
- ड्यूबोन्ट इंडिया लि.
- क्रिस्टल क्रॉम सॉल्यूशंस
- डाउग्लो साइंस
- एग्री सर्व इंडिया
- मीना इंडिया लि.
- खाल कार्पोरेशन लि.
- मेगमनी आर्गेनिक्स
- अदामा इंडिया लि.

17, विशाल टॉवर, इंडिया काम्प्लेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कैरा टेक्नोलॉजिस्ट प्रा. लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता

हमारे यहां पर ड्रिप में प्लैट और राउण्ड एचबीपीई व स्पिंकरल पाईप, एचबीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रैन पाईप बर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसयवद रोड, खरगोन, म.प्र.
मो. : 7880017028, 7880017021

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाइड
किसान हाईटेक ग्रीनहाउस नर्सरी

द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, सब्ज, कोला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जों के सीधे टेकन रोपड़ के जल संचयन सिस्टम के तहत किए जाते हैं।
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहकारी प्रोड्यूसन : बगमानी बाजार नर्सरी
बड़ा पर फलदार, सजावटी व फरस्ट्री पौधों की विस्तृत श्रेणी उपलब्ध है। सम्पर्क : मो. : 9407853117, 9407853118, 9407853119, नर्सरी स्वतः इन्फो-सिस्टम, 940785451115, लिना-खरगोन (म.प्र.)

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचालित गियर ड्राइव वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर

वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा. लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाउस नर्सरी

देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रॉपर, बोनास, सब्जोपेन्ट, केकडू, हैंगिंग प्लांट, ब्रीडिंग प्लांट, लकी बेंचू रोज, फरस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रेणी।
• आपका स्वागत है : तिरुपति (बड़बड़) मध्यप्रदेश
www.tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51

चंबल के प्रयासों की मुख्यमंत्री ने की सराहना



भोपाल (कृषक जगत)। राजधानी के जम्बूरी मैदान में आयोजित कृषक कल्याण वर्ष 2026 के अवसर पर वृहद किसान मेला लगाया गया। मेले में स्टालों का मुख्यमंत्री ने अवलोकन किया। चंबल फर्टिलाइजर एंड केमिकल के स्टाल पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने फीता काटकर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। कंपनी के वरिष्ठ प्रबंधक श्री विशाल शर्मा ने चंबल के उर्वरक उत्पाद, मिट्टी परीक्षण सुविधा, ग्रामीण विकास योगदान आदि गतिविधियों पर मुख्यमंत्री को अवगत कराया। इस अवसर पर कृषि मंत्री श्री ऐदल सिंह कंधाना, सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग एवं विभाग के अधिकारी कंपनी के प्रबंधक श्री आशुतोष गोरव, क्षेत्रीय अधिकारी विदिशा श्री कपिल चौधरी उपस्थित थे।

विभिन्न कृषि यंत्रों के लिए आवेदन आमंत्रित

इंदौर (कृषक जगत)। संचालनालय कृषि अभियांत्रिकी, मप्र, भोपाल द्वारा ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर बेलर, शुगरकेन रेटून मैनेजर, शुगर केन कटर प्लांट एवं रिजर के आवेदन दिनांक 23 जनवरी से 02 फरवरी 2026 तक आमंत्रित किये जा रहे हैं। लॉटरी दिनांक 03 फरवरी 2026 को सम्पादित की जायेगी।

आवेदन के साथ कृषक स्वयं के बैंक खाते से निम्नलिखित राशि का डिमांड ड्राफ्ट (डीडी) सम्बंधित जिले के सहायक कृषि यंत्रों के नाम से बनाकर जमा करना अनिवार्य होगा। धरोहर राशि के बिना आवेदन मान्य नहीं किया जायेगा।

इरिगेशन एसोसिएशन ऑफ इंडिया की बैठक इंदौर में संपन्न

इंदौर (कृषक जगत)। गत दिनों इंदौर में इरिगेशन एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आईएआई) की बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें आईएआई के निदेशक श्री राजेश यादव, अध्यक्ष श्री सौरभ सांगला, मप्र चैप्टर के अध्यक्ष श्री ओमनाथ वर्मा, उपाध्यक्ष

समाधान में किए गए विभिन्न प्रयासों के उदाहरण प्रस्तुत किए और गैर-सदस्य कंपनियों से भी सहयोग करने की अपील की। श्री सांगला ने मंच का मार्गदर्शन करते हुए भारत स्तर पर IAI द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला और उद्योग की मांग के

रेखांकित किया और उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों को उजागर करने में कृषक जगत की ओर से हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

श्री वर्मा ने म.प्र. की वर्तमान स्थिति का विवरण देते हुए राज्य में योजनाओं को गति देने के लिए शीघ्र कार्यान्वयन के लिए सभी निर्माताओं से सहयोग की अपील की। श्री कौरव ने कहा कि म.प्र. में सूक्ष्म सिंचाई का रकबा बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं। मप्र में विभिन्न जलवायु क्षेत्रों को देखते हुए यह विभिन्न फसलों के पैटर्न, सिंचाई क्षमता और जलवायु क्षेत्रों के साथ अच्छी तरह से विकसित करने के लिए अनुकूल है।

बैठक में एसोसिएशन के कोर कमिटी के सदस्य श्री अरुण कुमार, श्री अमोल मानकर, श्री चंद्रशेखर पाटिल, श्री धर्मनंद यादव, श्री राजकुमार जैन, श्री कमलेश सिंह की अध्यक्षता में पूरे भारत देश के 50 से अधिक प्रमुख सिंचाई कंपनियों के प्रतिनिधियों और मालिकों ने हिस्सा लिया। आधार श्री नरेन्द्र धांदे द्वारा किया गया।



श्री रवेश कौरव, कृषक जगत के संचालक श्री सचिन बोंदिया सहित आईएआई के पदाधिकारी और इरिगेशन विभाग से जुड़े विभागीय अधिकारियों ने भाग लिया।

श्री यादव ने इसके उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी और सदस्यता आधार बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे नीति निर्माताओं को सिंचाई के सकारात्मक प्रभावों को फसल उत्पादन, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक विकास, ग्रामीण रोजगार, और आधुनिक तकनीकों ड्रिप/स्प्रिंकलर से पानी के कुशल उपयोग के महत्व को समझाया। उन्होंने आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार आदि राज्यों में आईएआई द्वारा शुरुआती समस्याओं के

अनुरूप काम करने का सुझाव दिया। उन्होंने राज्य स्तरीय नीति निर्माताओं को उद्योग की ताकत दिखाने हेतु मिलकर काम करने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों को फसल संबंधी जानकारी सिखाने और ड्रिप-स्प्रिंकलर रखरखाव को सभी तक पहुंचाने के साथ ही योजना के शीघ्र कार्यान्वयन के लिए जीजीआरएस, राज्य द्वारा वित्त पोषण और डीबीटी मॉडल जैसी एकल खिड़की प्रणाली अपनाने का सुझाव दिया।

एनवीडीए से श्री मंडलोई और श्री सिरोंजा ने सिंचाई क्षमता बढ़ाने के लिए एनवीडीए द्वारा किए गए कार्यों पर चर्चा की। श्री बोंदिया ने सूक्ष्म सिंचाई के महत्व को

क्रॉपलाइफ इंडिया ने अनाधिकृत कीटनाशकों की बिक्री पर चिंता जताई

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 17 अनुसंधान एवं विकास संचालित फसल सुरक्षा कंपनियों के प्रमुख संगठन क्रॉपलाइफ इंडिया ने गत दिनों नई दिल्ली में आयोजित फसल सुरक्षा उत्पादों की ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर बिक्री संबंधी राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान इस मुद्दे को उठाते हुए ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से अनाधिकृत फसल सुरक्षा उत्पादों की अनियंत्रित बिक्री पर गंभीर चिंता व्यक्त की और कीटनाशकों की ऑनलाइन बिक्री में नियामक पर्यवेक्षण, प्रवर्तन दायित्वों और जवाबदेही को तत्काल मजबूत करने का आह्वान किया।

कृषि आयुक्त भारत सरकार डॉ. पी. के. सिंह ने कहा कि ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म द्वारा विक्रेताओं के जीएसटी दस्तावेजों जैसे बुनियादी अनुपालन जांच ऑनलाइन खतरनाक कृषि इनपुट की बिक्री के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती हैं। उन्होंने मजबूत गुणवत्ता आश्वासन, पता लगाने की क्षमता और आपूर्ति श्रृंखला जवाबदेही को आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि इन मुद्दों पर कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2025 के तहत विचार किया जाना चाहिए। जबकि भारत सरकार के सीआईबी एवं आरसी सचिव डॉ. सुभाष चंद ने कहा कि जहां एक ओर ग्रामीण भारत में डिजिटलीकरण और ई-कॉमर्स तेजी से फैल रहे हैं, वहां दूसरी ओर इनसे नए जोखिम भी पैदा हो रहे हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कीटनाशक खतरनाक उत्पाद हैं और ऑनलाइन बिक्री बढ़ने के साथ-साथ गुणवत्ता, अनुपालन और



किसान सुरक्षा की जिम्मेदारी प्लेटफॉर्म और निर्माताओं दोनों को साझा करनी चाहिए। ओएनडीसी के कृषि क्षेत्र प्रमुख श्री रविशंकर ने किसानों को असली उत्पादों की पहचान करने और मिलावटी उत्पादों के जोखिम को कम करने में मदद करने के लिए बेहतर सूचीकरण, परामर्श संबंधी जानकारी और पता लगाने की क्षमता की आवश्यकता पर बल दिया।

सम्मेलन में क्रॉपलाइफ इंडिया के अध्यक्ष श्री अंकुर अग्रवाल ने कहा, 'हम ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर कीटनाशकों की बिक्री के खिलाफ नहीं हैं। यह चर्चा इस बात को सुनिश्चित करने के लिए है, कि नियामक और प्रवर्तन ढांचे डिजिटल वाणिज्य की वास्तविकताओं के अनुरूप विकसित हों। अनाधिकृत उत्पादों से निपटना नीति निर्माताओं और फसल सुरक्षा उद्योग की साझा प्राथमिकता है और किसानों की सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और उपभोक्ताओं के विश्वास के लिए महत्वपूर्ण है।'

क्रॉपलाइफ इंडिया ने बताया कि फसल

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर बिक्री संबंधी राष्ट्रीय सम्मेलन में उठाया मुद्दा

सुरक्षा उत्पादों का विनियमन कीटनाशक अधिनियम, 1968 और कीटनाशक नियम, 1971 के तहत किया जाता है, जो बिक्री और वितरण के लिए एक सख्त नियंत्रित प्रणाली स्थापित करते हैं। इस ढांचे के तहत, कीटनाशकों की बिक्री केवल लाइसेंस प्राप्त विक्रेताओं द्वारा ही की जा सकती है, उनके लाइसेंस पर अंकित विशिष्ट उत्पादों के लिए, अनुमोदित भौगोलिक क्षेत्रों के भीतर और निर्माता या आयातकर्ता द्वारा जारी वैध और मौजूदा मुख्य प्रमाण पत्र द्वारा समर्थित है।

एसोसिएशन ने बताया कि कीटनाशक ऑनलाइन मार्केटप्लेस और इन्वेंट्री-आधारित ई-कॉमर्स दोनों मॉडलों के माध्यम से बेचे जा रहे हैं। कीटनाशक नियमों का नियम 10ई, जिसे 2022 के संशोधन के माध्यम से लागू किया गया था, कीटनाशकों को ऑनलाइन या घर-घर डिलीवरी की अनुमति देता है, लेकिन यह लाइसेंस, मुख्य प्रमाणपत्र, अनुमोदित परिसर या भौगोलिक प्रतिबंधों से संबंधित मौजूदा आवश्यकताओं को कमजोर या निरस्त नहीं करता है।

उज्जैन में पहली बार विंध्य हर्बल वन मेला लगेगा

उज्जैन (कृषक जगत)। उज्जैन में पहली बार विंध्य हर्बल मेले का आयोजन महाशिवरात्रि पर्व की अवधि के दौरान 12 फरवरी से 16 फरवरी तक दशहरा मैदान में वन विभाग के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। वन मेले का शुभारंभ आगामी 12 फरवरी को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किया जाना प्रस्तावित है। इस मेले का उद्देश्य आमजन को वन, पर्यावरण, वन्यजीव संरक्षण आयुर्वेद और पारम्परिक ज्ञान, वनोपज, हर्बल उत्पादों, आयुष, स्वास्थ्य, जैव विविधता एवं जनजातीय संस्कृति से जोड़ना है।

वन मंडल अधिकारी श्री अनुराग तिवारी ने बताया कि मेले में मध्य प्रदेश सहित देश के विभिन्न राज्यों के हर्बल उत्पाद, आयुर्वेदिक औषधियां, वनोपज पर आधारित हस्तशिल्प कला कृतियां, आचिक व्यंजन प्रदर्शित किए जाएंगे। इस मेले में देश के विभिन्न राज्यों के साथ प्रदेश के जिलों में मिलने वाली जड़ी बूटियां और वनोपज लोगों को देखने व खरीदने को मिलेगी। इस संबंध में पिछले दिनों प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रबंध संचालक म.प्र. राज्यों लघु वनोपज संघ द्वारा उज्जैन में विभिन्न स्थलों का निरीक्षण किया गया।

मंडला में खरीदी केन्द्र प्रभारी को हटाया

मंडला (कृषक जगत)। उपार्जन केन्द्र चिरईडोंगरी रेलवे में धान खरीदी के दौरान कृषकों से अवैध वसूली की शिकायत मिलने पर एसडीएम नैनपुर श्री आशुतोष ठाकुर द्वारा जांच दल का गठन किया गया था।

जांच उपरांत त्वरित कार्यवाही करते हुए एसडीएम नैनपुर श्री आशुतोष ठाकुर द्वारा खरीदी केन्द्र प्रभारी अकोल अहमद वेग को तत्काल प्रभाव से पद से हटा दिया गया है।



नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री



77^{वें} गणतंत्र दिवस^{की}

प्रदेशवासियों को अनेक मंगलकामनाएं



भारत के 77वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। आज राष्ट्र के हर नागरिक के हृदय में देशभक्ति और देश के लिए गर्व का भाव सशक्त हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व क्षमता के फलस्वरूप यह सब संभव हो पाया है। आज भारत वैश्विक शक्ति बनकर उभर रहा है।

-डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश की उन्नति के मुख्य स्तंभ

अन्नदाता की समृद्धि से प्रगति की ओर मध्यप्रदेश

वर्ष 2026 को 'किसान कल्याण वर्ष' के रूप में घोषित किया गया है, इसका उद्देश्य अन्नदाता को समृद्ध और सशक्त बनाना है।

युवा शक्ति से राष्ट्र निर्माण

मध्यप्रदेश के युवा सक्षम और कौशलवान बनकर अपने सपनों को साकार करें और समाज में सकारात्मक बदलाव लाएं, इसके लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

गरीब एवं जनजातीय वर्ग की तरक्की का संकल्प

गरीब और जनजातीय वर्ग के उत्थान के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और समस्त मूलभूत सुविधाओं के लिए हमारी सरकार संकल्पित है।

सशक्त नारी - सशक्त मध्यप्रदेश

नारी परिवार और समाज का दर्पण होती है। महिलाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनके पोषण, स्वास्थ्य से लेकर शिक्षा एवं रोजगार तक का ख्याल प्रदेश सरकार रख रही है।

अतुल्य विरासत से वैभवशाली मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत अद्भुत एवं समृद्ध है। यहां नैसर्गिक सुंदरता के साथ-साथ कला और संस्कृति भी बहुआयामी है।

औद्योगिक विकास का नया अध्याय

मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास का एक उभरता केंद्र बन चुका है। गांवों को शहरों से जोड़ना ही या नए उद्योग स्थापित करने हों, प्रदेश आज चोतरफा विकास की ओर लगातार आगे बढ़ रहा है।



सीधा प्रसारण

@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh

@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP

jansamparkMP